कृण्वन्तो ॥ ओउम ॥ विश्वमार्यम्

जीवन-रहस्य

अध्यात्मिक ज्ञान कोष

(भाग-दो)

-: लेखक :-

सुरेन्द्र कुमार ढांडा, आर्यसमाज

एम० ए० (M. A.)

185, ए० जी० सी० आर०, इन्द्रप्रस्थ एक्सटैंशन

दिल्ली–92 (फोन : 011-22373247)

जीवन रहस्य
अध्यात्मिक ज्ञान कोष

(भाग-दो)

सुरेन्द्र कुमार ढांडा
एम.ए. (M.A.)
(लुधियाना निवासी)

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
नई दिल्ली-110053

श्री [illegible] प्रकाशन
मुख्य कार्यालय—ए-507/12, साउथ गामडी, एक्स, दिल्ली-110053
फोन न. 011-22941694, 9312754789, 9013336770
विक्रय केन्द्र—4378/4 बी, 306 जे.एम.डी. हॉउस मुरारीलाल स्ट्रीट,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोन न.—011-30124789

मूल्य : 20.00 रुपए

प्रथम संस्करण : 2010

शब्द-संयोजन : प्रिंस कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : सलमान ऑफसेट, दिल्ली-110053

भारत में मुद्रित : JEEVAN RAHASHYA
by Surendra Kumar Dhanda (M.A.)**Price–20.00**

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गामड़ी, एक्स. नई दिल्ली-110053 से टी. एस. राघव द्वारा प्रकाशित, प्रिंस कम्प्यूटर्स द्वारा सज्जा तथा सलमाल ऑफसेट प्रेस, मौजपुर, दिल्ली-110053 द्वारा मुद्रित।

अनुक्रम

सत्यम् जयते

पाठको जो कार्य प्रभु भक्ति, सयम, संतोष समता, पुरुषार्थ की चारों अनूभूतियों–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के ज्ञान तत्वों से किया जाता है, सदा सफलता के पर्वत पर पहुंचाता है। यही सत्य है। मेरा यह ही प्रयास रहा। अच्छे पूर्वजों के संस्कारों से ही मुझमें धर्म की शक्ति प्राप्त हुई। अपने पूर्वजों माता-पिता, भाई-बहन आदर्श अर्द्धांग्नि (पत्नी) मित्र तथा शक्तियों के भण्डार दाता को हाथ जोड़कर सदैव जीवन यात्रा की सफलता सुख पाने की प्रार्थना करके नम्न करता हूँ।

उस प्रभु की प्रेरणा ने मुझे साहित्य दर्शन कराया। उसकी शक्ति से लिखने में सम्पन्न हुआ।

मानसिक शांति मेरी पहली पुस्तक 2006 में प्रकाशित

जीवनरहस्य दूसरी पुस्तक 2007 में प्रकाशित

अध्यात्मिक अनुभूति भाग-1 तीसरी पुस्तक 2009 में प्रकाशित

सबके विषय अध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक राष्ट्रभक्ति के स्वरूप थे। बिना भेद, धर्म, विवाद मेरे लेख छेपाने में सहयोगी पत्रिका हैं–

1. टंकारा समाचार–दिल्ली–सम्पादक श्री अजय जी श्री राम नाथ सहगल विरला
2. आर्यमर्यादा–जालंधर–सम्पादक श्री धर्मवीर
3. आत्म शुद्धि–बहादुर गढ़–श्री धर्म मुनि दुग्धारी
4. स्वस्थि पंथा–ऋषिकेष–संन्यास वानप्रस्थ आश्रम
5. शुद्धि समाचार–श्री बनवारी लाल जी
6. आर्य मित्र–लखनऊ तथा मेरी पत्नी श्रीमती बलवीर ढांडा
7. Better life-Servant of people Society New Delhi

तथा अन्य सबका आभारी हूँ।

मेरा लक्ष्य है आर्य समाज का वैदिक प्रचार तथा मनुभर्व। मेरे प्रेरक हैं–महर्षि दयानन्द सरस्वती। वेद ज्ञान कर्म है–बुराईयों की शुद्धि–प्रभु भक्ति।

जन्म : 20-6-1929 अफ्रीका **सुरेन्द्र ढांडा एम.ए.**

कुछ आनन्द की बातें

स्मरण करो (याद करो)–क्या?

1. बन्धन, ममता, प्रीति, तृष्णा, मोहमाया, प्रीति लोभ जीवन के पतन के मार्ग हैं। अस्तु ममता मत करो–यह मनुष्य को बन्धनों में फंसाने वाले हैं।
2. याद करो : भोग-विलास, पदार्थों का चस्का, इच्छाएं, बाहरी पिपासा (प्यास), प्रकृति के सौंदर्य का आकर्षण असत् है, माया जाल, मनुष्य की आत्मा को लिप्त करने वाले मकड़ी के जाल तन्तु की तरह दुष्ट शत्रु और बन्दी बनाने वाले हैं। त्यागो इन्हें, दूर रहो इनसे, मर्यादा सीमा पहचानो तभी आनन्द, स्वर्ग का द्वार पाओगे।
3. याद करो : 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध'–योग ही चित्त वृत्तियों का धर्म है, जो मन को शुद्ध करके, शुभ कर्मों से आत्मा को परमात्मा के समीप पहुंचाता है।
4. याद करो, ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के पुण्य वचन–भद्रं नो अपि वातय मनः। प्रभु मन को शुभ कीजिये। (ऋग्वेद)
5. याद करो यदि प्रभु में मन लगाना है। मानसी सेवा को कल्याणकारी अपनाओ, जब मन प्रभु के परायण हो जाता है तो भगवद्‌कार हो जाता है। भगवान की आस्था को स्वीकार करोगे तो सदा भगवान पर आश्रित होकर योगाभ्यास से मन को भगवान समीप दमन, एकाग्र करके, मोक्ष के पथ की ओर बढ़ोगे। जिसका मार्ग है सामवेद का श्रेष्ठ ज्ञानपथ उपासना।
6. याद करो कि भगवान के अतिरिक्त जो कुछ भी है–असत् है, माया है और उसे जीवन से निकालो। क्योंकि माया जाल, असत दृश्यों की तृष्णाओं, विकारों की दीवार उत्पन्न होने से आत्मा परमात्मा के अन्तर्तात्मा में निकट होने पर मिलने में रूकावट पैदा करते हैं। तोड़ो इन्हें आध्यात्मिक बोध शक्ति में मन लगाओं।
7. याद करो-सारा संसार भगवान की माया है। सत्य उपदेश आध्यात्मिक विषय–पर चर्चा करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने उपदेश लक्ष्मण को इन भावों से दिया।' "मम माया संभव संसारा।" जीव विधि प्रकारा। सब मम प्रिय

ममू उजाए। सबरू अधिक मनुज मोहि भाए। **(रामचरित मानस)**
हे लक्ष्मण यह जो कुछ जगत दिखाई देता है, वह सब माया है। अपने चित्त और सुखी होकर, आनन्दपूर्ण और क्लेशशून्य हो जाओ। क्योंकि शुद्ध परमात्मा में सम्पूर्ण विश्व रज्जू में सर्वभ्रम समान माया में कल्पित है।

8. याद करो—मनुष्य को ऊपर उठाकर सौपान पर पहुंचाने के लिए प्रभु की तीन शक्तियों के गुण पैदा करना, दैविक ज्ञान है—(क) सत्य कथनी करनी, (ख) मधुर वाणी, (ग) विनीत—अर्थात् ज्ञान जो सर्वोत्तम ज्ञान आभूषण है जो ऐसा बनाकर गया।
9. मत भूलो—हिन्दी संस्कृति के पुण्य आधार चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद की अनुभूतियां सब राज्य विद्याओं के ग्रंथ हैं। उनका पढ़ना पढ़ाना आर्य बनने का मूल्यांकन है।
10. याद करो और जानो—सृष्टि के आधार प्रकृति, जीव, परमात्मा अनादि हैं। आत्मा शरीर को प्राण गति देकर मनुष्य को कर्मशील मननशील, स्वाध्याय, धर्म पालन करके, अपने शरीर क्षेत्र निवास को तत्वदर्शी—प्रकृति उत्पन्न हेतु, कार्य कारण कराके, जीवात्मा सुख-दुःख को भोगती है। आत्मा ही सरल तत्व शरीर का आधार है।
11. परमात्मा—सूक्ष्म निराकार, शक्तियों का भण्डार, दाता, दीन, दयालु, आत्मा का परमात्मा, अर्न्तात्मा में, दो छाती के बीच गड्ढे में विद्यमान, आत्मा के साथ मन की भावनाओं से प्रेरित करता है।
12. याद करो, क्या यह जगत ईश्वर से अलग उत्पन्न करता है, कर्मों के फल प्रदान दाता है। दुःख-सुख के कारण मनुष्य स्वयं कष्ट उत्पन्न करके मृत्यु पाता है। मृत्यु ज्ञान है। आत्मा का आनन्द धन प्रकृति के पीछे भागने से आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता। उसका मार्ग इसकी शरण में जाकर योगाभ्यास मन, शुद्ध आत्मा से परमात्मा को सामवेद के उपासना मार्ग से मन से अविद्या, बन्धनों से मुक्त करना है। यही जीव को परमात्मा ने लक्ष्य दिया है।
13. जीवन का उच्च मार्ग पाना है तो प्रभु भक्ति में लगे रहो, सत्य आचरण, धर्म का पालन, मननशील, प्रीति त्याग, विनम्रता, निष्पाप क़र्म, निष्फल त्यागी बन कर दान, विद्या प्राप्ति जो भी घटती नहीं तथा मृत्यु को मत भूलो।
14. जो बीत गया—भूल जाओ, आगे की सोचो। **(बर्नाडशाह)**
15. कर्म बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना मानवता नहीं, प्रभु भक्ति बिना सदाचार नहीं, पुण्य बिना उपकार नहीं, आत्म प्रकाश बिना बोध नहीं, काम, क्रोध, लोभ, मोह, शत्रुता को त्यागो।

16. याद करो–कृपण होना जितेन्द्रिय नहीं है। धन को जंगमत लगाओ।
17. याद करो–न्याय से प्राप्त दुःख सहना तितिक्षा है।
18. जिह्वा जननेद्रिया प्राप्त करना ही धैर्य है।
19. किसी से द्रोह न करना, सबको अभय देना ही बड़ा दान है।
20. निरपेक्षता आदि गुण शरीर के सौन्दर्य है।

भक्ति भजन

हम सब मिलके दाता आए तेरे दरबार
झोली भरदो सबकी तेरे पूर्ण भण्डार॥
होवे जब संध्या काल, निर्मल होके तत्काल।
अपना मस्तिष्क झुका के करके तेरा ख्याल। हम सब मिलके
तेरे दर पर आके बैठे सारा परिवार।
ले के दिल में फरयाद करते हम तुम को याद।
जब हो मुश्किल की घड़ियां, तुम से मांगे इमदाद।
सबसे बढ़के ऊँचा जंग में तेरा आधार। हम सब मिलके
चाहे दिन हो विपरीत होते तुम से प्रीत।
सच्ची श्रद्धा से गांवे तेरी भक्ति के गीत।
होवे सबका प्रभु जी तेरे चरणों में प्यार। हम सब मिलके
तू है सबका बाली करता सब की रखवाली।
हम हैं रंग-रंग के पौधे तुम हो सबके माली
बाग बगीचा है यह तेरा सुन्दर संसार। हम सब मिलके

(शुद्धि समाचार फरवरी 2010)

भारत की रक्षा श्रद्धांजलि

भारतवर्ष के भिन्न धर्म, भावनाओं के हित चाहने वालो, आज जो हमारे देश पर जो दुखित घड़ी आन पड़ी थी, उस हलचल, चिंता के बादलों की गूंज हर भारतीय के हृदयों में उत्पन्न हो रही थी। वह थी एक शोक ध्वनि, बचाओ इन मासूम जनों को जो मुम्बई के ओबराय, ताज होटलों तथा नरीमन को—जिन्हें उन अत्याचारी आतंकवादियों के हथियारों, बम, मशीनगन, अन्य विस्फोटक सामग्री लेकर लोगों को बन्धक बना रखा है। भगवान बड़ा दयालु है। उसने भेजे वह मसीहे, एनएसजी कमाण्डो और मुम्बई की वीर पुलिस कर्मचारी सेनानियों को। जिस साहस, शांति, सब्र से उन वीरों ने इस उद्देश्य को पूरा किया, उनको हर इतिहासकार स्वर्ण अक्षरों में श्रद्धांजलि देकर अंकित करेगा। यह यादें जब तक सूर्य चांद रहेगा सदा अमर रहेंगी। उनके भीतर एक ही भगवान की प्रेरणा जाग उठी थी कि हम यहां योगी कृष्ण बनकर अधर्मियों का नाश करने के लिए सच्चे धनुर्धारी वीर अर्जुन बनकर योगीराज कृष्ण की मिशन लेकर आये हैं कि जब तक हम विजय प्राप्त नहीं करेंगे, हम यह धर्मक्षेत्र युद्ध लड़ते रहेंगे। यदि हमने यह प्रतिज्ञा में जरा ढील की तो यह आतंकवादी हमें कायर कहकर इस रणभूमि से भगा देंगे और हम जीते हुए भी मरे बराबर लज्जा से डूब जायेंगे।

(गीता)

यह प्रतिज्ञा दैविक शक्ति की प्रेरणा भरी हुई थी इन वीर जवानों में। आज उनके बलिदान ने आतंकवादियों को मिट्टी में भस्म कर दिया जो एक बचा उससे उनके षड्यंत्र की गाथा शीघ्र सामने आने से, जिस देश के वह हैं, भगवान उस देश की चाल को कभी भविष्य में सफल नहीं होने देगा। इस धर्म क्षेत्र की विजय ने भारतीयों के अन्दर एक नया उत्साह, जागृति भर दी है।

सारे देश में अखण्डता, एकजुट होकर आतंकवादियों को मिटाने की शक्ति उत्पन्न हो गई है। हर देश के प्राणी को गर्व है कि कितने आत्मविश्वासी थे हमारे फौजी नौजवान, कमांडो और मुम्बई पुलिस के वीर की उन्होंने जान की बाजी लगा दी, पर उन वीर अर्जुनों ने अधर्मी अत्याचारी शत्रु पाकिस्तानी अत्याचारियों के टुकड़े-टुकड़े करके दिखा दिया कि हिंसा का अन्त मौत होता है। वह अखण्डता के

देवता अर्जुनों ने सच्चा धर्म सिद्ध करके दिखाया कि देश, धर्म रक्षा मनुष्य की रक्षा भगवान की पूजा है। That is service to man is service to God. बन्धकों को बचाने के लिए जान की बाजी लगा दी। हम भारतीय, और यह तुच्छ वृद्ध आत्मा को गर्व है उन शहीद कमाण्डो, पुलिस, जनता, मीडिया का जिन्होंने शत्रु देश को जतला दिया कि भारत की अखण्डता क्या है। संकट देश पर आने से हम भारतीय हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैनी, बौद्ध, पारसी, चाहे किसी भी धर्म या इष्ट को मानता हो, उसकी आवाज एक गर्जन से उठती है—हम सब भारतीय हैं, देश हमारा है, इसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। मैं इस लेख द्वारा महर्षि दयानन्द के अनुयायी होते हुए नम्न करता हूँ, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ उन एनएसजी कमांडो, पुलिस को जिन्होंने देश की रक्षा के लिए सब कुछ न्यौछावर कर दिया। यह है स्वतंत्र नागरिक की श्रद्धा। सच कहा था बालगंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी लड़कर दिलाऊंगा—यह शब्द नेता जी के हैं और महर्षि दयानन्द को मत भूलो, क्योंकि उन्होंने कहा कि स्वतंत्र शासक कितना बुरा हो, गुलामी से अच्छा है। पाठको, स्वतंत्रता चाहो, एक होकर उन आत्माओं को नम्न करो जिन्होंने देश बन्धकों की रक्षा की।

(टंकारा समाचार—जनवरी 2009)

❁❁

कमजोरी का इलाज उसका विचार न करना है (महर्षि अरविन्द)

वेदों की सूक्ष्म अनुभूतियां

भारतीय संस्कृति का प्राचीन प्रभाव दिन-प्रतिदिन घटता जा रहा है। लोग विदेशी रीति-रिवाजों और विधाओं को जीवन का वास्तविक रहस्य समझने लगे हैं और अपने देश के विकास पर ध्यान न देकर काफी संख्या में विदेशी व्यवसाय शुरू करके वहां ही बसने लगे हैं। यह सब गुलामी व अंग्रेजी और मुस्लिम सभ्यता का प्रभाव हैं। लोग वेदों को भूल रहे हैं। संस्कृत, हिन्दी भाषा को कम बढ़ावा देने लगे है। जिधर देखो, अंग्रेजी का बोलबाला है।

यह सब देश की संस्कृति के पतन और खोखला करने के कारण हैं। मेरे देशवासियो! आर्यो! अपनी आत्मा को पहचानो कि हमारी सुरक्षा केवल अपनी प्राचीन सभ्यता को फिर लाने से होगी।

हमारे सबसे प्राचीन ग्रन्थ चार वेद हैं—ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद। उन चारों वेदो को पढ़ो और जानो कि किस प्रकार परमेश्वर ने ईश्वरीय ज्ञान चारों ऋषियों-अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा को समाधि योग, प्राणायाम आदि के बल से पुरुषार्थ करके एकाग्रता से मनन करके पाया, फिर आगे फैलाया। ईश्वर ने विज्ञान-ज्ञान को प्रधान बनाया, क्योंकि विज्ञान (Science) एक ऐसी विद्या है जो सृष्टि, जगत् प्रकृति जीव, छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े अर्थात् सब योगियों, पदार्थों का यथावत् ज्ञान है कि कौन-कौन से पदार्थ प्रभु ने किस प्रयोजन और उपयोग के लिए पैदा किये हैं। यह पदार्थों और अन्य वस्तुओं का अस्तित्व कैसे बना प्रमाणु और अणु क्या हैं और उनसे सब कैसे बना, जगत् कैसे प्रकाशित हुआ। दूसरा कर्म व्यवस्था का साधन दिया। जीवात्मा को प्रवेश करके मनुष्य को कर्म करने के लिए शरीर बनाया इन्द्रियाँ, पाँच कर्म इंन्द्रियाँ, पांच ज्ञान इन्द्रियाँ, मन-बुद्धि, अन्तः करण, शरीर का पिंजर बनाकर रचना की। जीवात्मा को चेतना शक्ति देकर इन्द्रियों, मन एवं बुद्धि को गति में चलने की शक्ति देकर इच्छाएं, विचार, फिर विचारों से ज्ञान और ज्ञान से बुद्धि द्वारा उपासना का विषय रचा, जो परमेश्वर के साथ आत्मा द्वारा मन की एकाग्रता पाकर सीधा साक्षात्कार कराया।

अतः वेदों के तात्पर्य और विद्या को मत भूलो। यह वेद विद्या बताती है कि

पृथ्वी, जल, तृण से लेकर छोटे पंतगे, कीड़े और जगत्, प्रकृति में फैली हुई वनस्पति, पदार्थ के क्या गुण हैं, या अवगुण हैं। दूसरी विद्या है कि सर्वशक्तिमान् ब्रह्म की कैसी आध्यात्मिक साधना से प्राप्ति की जा सकती है, क्योंकि उसके बिना न विज्ञान, न कर्म, न उपासना, न ज्ञान प्राप्त हो सकता है, न उत्पत्ति, न प्रलय। जगत् की धारणा का चक्र चल सकता है, पर जगत परमेश्वर से अलग है।

अन्त में मेरा पाठकों से यही अनुरोध है कि परमेश्वर को पाने के लिए समस्त शक्तियों, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, का संयम और शुद्धता से विकास करना अनिवार्य है। पर उनके लिए वेदों के चार मुख्य विषय विज्ञान, कर्म, उपासना, ज्ञान के कारण समझकर कार्य में प्रेरित करके—मन, तन, आत्मा को सकंल्प लेते हुए पूरा करना चाहिए। क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर का उपदेश है कर्म करो, अच्छे कर्म करो जिसके लिए स्वतंत्र हो, पर भुगतने के फल देना परमेश्वर के हाथ में है जो सब कुछ जानता, देखता, सुनता और ज्ञानी है।

पत्रिका : स्वस्ति पन्था :
ऋषिकेष (हरिद्वार)
जनवरी 2007

शान्ति निसंकल्प रूप से स्थित रहना महान गुण है
गायत्री चारों वेदों का माता है (श्री राम शर्मा)

भौतिक युग की दुष्टजनक यात्रा

समय बड़ा बलवान् है। सुख-दुःख का आना जाना मनुष्य जीवन है, जिसके बिना मनुष्य मनुष्य नहीं बन सकता। यह जीवन की यात्रा के दो किनारे हैं। नदी के वेग की तरह कर्म उसका पानी है जो उसकी उथल-पुथल सुख-दुःख की यात्रा से पार करने का साधन है। स्वर्ग सुख और पवित्र कर्मों की दिशा है। नरक दुःख बुरे कर्म का कारण और सोपान है। पर मनुष्य कर्मयोनि की श्रेष्ठ योनि के नाते जन्म से उसका स्वाभाव प्रकृति कर्म करना है। उपनिषद् के वचन हैं कि कर्म करते जाओगे तो स्वास्थ्य पुष्ट होगा, व्याधि कम उत्पन्न होंगे और यदि सामना करना पड़ा तो दैविक शक्तियां प्रभु के आभार से सहने में सहायक बनेंगी। मनुष्य का मूल तत्व है जीने का लक्ष्य प्राप्त करना। ज्ञान विचारों की भूमिका सदाचार के गुण विवेक की शक्ति से संस्कारों को उज्ज्वल करते हैं। मनुष्य के प्राण आत्मा और ईश्वर उसका पिता, उत्पत्तिकर्त्ता रक्षक है। उससे बढ़कर कुछ नहीं है, न होगा, न हुआ। वह सृष्टि और वैज्ञानिकों के अनुभव के अनुसार लगभग दो अरब वर्ष हैं। यह सृष्टि कुछ मिनटों, घंटों, महीनों में नहीं रची गई। इसकी रचना वर्षों, शताब्दियों के परमाणु, अणु इत्यादि के प्रभाव और सहयोग से बनी, गर्मी सर्दी के दबाबों और दूसरे प्रभाव ने पदार्थ, वनस्पतियों की उत्पत्ति की। मैथुनी शक्ति से, नर-नारी के सहयोग से पुत्र-पुत्री आदि सन्तान उत्पन्न हुई। फिर जनसंख्या बढ़ती गई। मनुष्य की बौद्धिक शक्ति ने आध्यात्मिक बल देकर, आत्मा ने शरीर रूपी चोला पहनकर उसपर आधार बनाया। उसके प्राणों को गति देकर कर्म करना, सोचना-विचारना, इच्छाएं करना फिर आत्मा को स्वस्थ शरीर के अंगों से आनन्द देकर उन्नति प्रगति करना, पवित्र कर्मों से योग बल से ईश्वर प्राप्ति का लक्ष्य प्राप्त करना सीखा। ईश्वर प्राप्ति केवल मनुष्य योनि में ही सम्भव है, ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा को ज्ञान, कर्म, उपसना और विज्ञान की प्रेरणा समाधिस्थ होकर मनन, साधना से मिली, फिर यह प्रेरणा संसार में फैला कर चारों वेद ग्रन्थों का प्रकाश मिला। यह वेद सब विधाओं की सत्य विद्या तथा ईश्वर से लेकर सृष्टि रचना, पदार्थ का सहयोग से बनना, उपयोगिता प्राप्ति और प्रयोग करना तथा सब योनियों में जीने के लिए साधन-निधि तथा ज्ञान-स्रोत हैं।

मनुष्य का कल्याण, सुख कर्मों का विधान उसके सब व्यवहारों का संचालन तथा जगत् की व्यवस्था मनुष्य, आत्मा, प्रकृति, परमात्मा की अनुभूति है।

परमात्मा सब आत्माओं का परमात्मा है। सूर्य आदि संचारों का प्रकाशित करने वाला परमात्मा है। सूर्य और जगत् का संचालन स्वामी, आत्मा प्रभु का अस्तित्व होने का प्रमाण है जो नास्तिक लोगों के लिए एक नर्क है। यजुर्वेद उस सूर्य की शक्तियों को इस मन्त्र से प्रकाशित करता है–**सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।**

जिस प्रकार सूर्य जगत् का संचालन करने की ईश्वरीय प्रकाशित आत्मा और इस सौर जगत् की आत्मा है, उसकी ईश्वरीय अनुभूतियां, अच्छे कार्य, जैसे समय पर उदय, अस्त होकर दिन-रात सबको देखने के लिए समानता से प्रकाश देना, न खाना, न विश्राम या छुट्टी करना, परन्तु जीव से लेकर वनस्पतियों तक को गर्मी देकर पकाकर जीवन को जीने का साधन देना, जल को सुखाकर, भाप बनाकर वर्षा, करना, धूप छाया दिखाना, रात्रि में चन्द्रमा से प्रकाश दिखाकर राही का अंधेरा दूर करना, सूर्य की आत्मा कितना कर्तव्य रूपी, अनुशासन प्रिय शुद्धता का उदाहरण है। उसके उपकार को जानकर मनुष्य की जगत्, आत्मा को शरीर का संचालन धर्मयुक्त तथा पुरुषार्थ और आनन्द से आध्यात्मिक शक्ति को ऊपर उठाकर उस ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य की प्राप्ति करनी चाहिए। परन्तु अच्छे ज्ञानपूर्वक कर्म शुद्धता से परमात्मा की अनुभूतियों से निपुण सूर्य अनुशासन प्रिय है। निष्पाप, निःस्वार्थ, निष्फल त्याग, मानसिक और आध्यात्मिक प्रेरणा से योग करके मन को आत्मा से, आत्मा को परमात्मा से जोड़कर मोक्षदायक ही उस प्रभु को प्राप्त करना आत्मा का आनन्द है। अतएव पाठको इस भौतिक युग का सुधार करो, अपनी आत्मा को जानो पहचानो, इस संसार को दुष्टजनक कर्मों से बचाओ। अहिंसा का पाठ पढ़ो, बुरे मार्ग से, धन, सम्पत्ति, राज्य, प्रलोभन, नारी का शोषण, धन के लोभ, बच्चों, नारी मनुष्य को उठाकर ले जाना यह नरक की यात्रा है। इस पथ से दूर रहो। तभी तो गीता में अच्छे कर्म, संसारिक बन्धनों से दूर रहकर धर्म के पालन, प्रभु की शरण पाना ही सच्चा जीव और आत्मा का ज्ञान और सुख, यह पालन से अर्जुन ने जीत पाई।

योगस्थः कुरुकर्माणी

यह है कर्म का फल, आत्मा का आनन्द, गीता का उपदेश।

(स्वस्ति पन्था; (ऋषिकेष)
सितम्बर 2008)

ज्ञान की बातें

यह सारा संसार ईश्वरीय माया रूप है। इसके दृश्य को नेत्रों से प्रत्यक्ष देखकर, आंखें मोहित होती हैं, फिर स्मृति द्वारा अहंकार रूप को आत्मा पर प्रकाशित करके चित्त को उत्साहित करके, संस्कारों के स्थूल शरीर के चित्त से उलट-पुलट करके बुद्धि मण्डल से फेंक कर अंहकार चित्त का अधिकाय बन जाता है। अहंकार तत्त्व उस समय काम करता है जब बुद्धि से अवकाश ग्रहण करके आत्मा बैठ जाती है यह आत्मा के समीप तत्व है।

यह अहंकार ही ईश्वरीय माया रूप तथा आत्मा का अहम है,। इसी अहंकार में परमात्मा का भान होता है जो कर्म प्रधान तत्व है। (कर्म कराने) जो दिल के सभी संस्कारों में होता है। शरीर जल जाता है पर चित्त नहीं।

यद्यपि संसार, जगत के कारण तीन तत्व-सत, रज, तम-प्रकृति से उत्पन्न होते हैं। पर उन तत्वों को भुलाकर रज, तम को दबाने से सत तत्व ही इस अहंकार रूप पर प्रभाव डालकर ज्ञान से सार्थकता प्राप्त करता है। मनुष्य में राजसी तत्व होते हैं, पशुओं में तामसी। पर सत्य पर अटल होने से ज्ञानी देवताओं में सात्विक गुणों का भण्डार होता है। जैसे पुरूषोत्तम राम, योगी कृष्ण, महर्षि दयानन्द विवेकानन्द, महात्मा गांधी आदि।

अहंकार रूप ही मनुष्य का शत्रु है जिसके उत्पन्न होने से अंधकार अज्ञानता, स्वार्थ माया, आदि प्रकृति में अज्ञानता लाकर प्रभु सृष्टि के नियमों को मनुष्य का तोड़ना, चलना ही दुःख के कारण बनकर नाश होता है। बचना चाहते हो तो प्रभु को जानो।

कर्मों का विधान शुभ से सूक्ष्म, सात्विक गुण अशुभ से राजसी, तामसी ही जीवन में उतार चढ़ाव, पतन प्रगति का अभाव होता रहता है।

इतिहास इसका साक्षी है कंस, कौरव दुर्योदन के राजसी-तामसी गुणों ने अन्त किया, हिटलर के अहंकार रूप तम के चित्त पर विलक्षण नाशक प्रभाव ने जर्मनी के दो टुकड़े करा दिये। भारत में चित्त वृत्तियों राजसी, तामसी गुणों के अधिक प्रभाव ने छुआ-छात, जात-पात, गरीबी-अमीरी, धर्म में पौराणिक ... नारी में असमानता

शिक्षा के भेदभाव, ब्रह्मचर्य का छोटी आयु में खंडन नारी का छोटी आयु में विवाह, अत्याचार के हिंसक तैमूरलंग, बाबर, दुष्ट औंरगजेब के शासकों के अहंकार ने जो किया हम उसका प्रभाव देखकर दुःख भोग रहे हैं। धर्म परिवर्तन, हिन्दुओं की कमी, आर्यों का शोषण, क्या हुआ? देश विखरता जा रहा है। धर्म का नाश हो रहा है। चाहे वेद विद्या हो, रामायण हो, कुरान, बाइबल, बौद्ध धर्म, सिखों, पारसियों के अच्छे संस्कार होने के मार्ग नहीं प्रकट होते। प्रभु कृपा करो। रक्षा करो।

आज अहंकार तत्व तथा माया रूप, भारत का ढांचा तपस्वियों की ज्ञान की जगह, बुराइयों की अज्ञानता में घूम रहा है। भूख प्यास, कम खेती की उपज, धन की कमी और उसके प्रयोग में बंटवारे का शोषण, मजदूरों, उद्योगपतियों में आपसी दूरी ने बेकारी के जो कारण पैदा किये हैं। चिन्ताजनक विचारणीय विषय हैं। नारी के गिरे रूप, फैशन लिपस्टिक का प्रयोग, उलटा चमड़ी के रोग जो उत्पन्न होकर, वासना के पीछे बाहरी सुन्दरता देखकर उसके पीछे अंधा होकर भागता है। यदि वासना की तृप्ति न दी, कत्ल, विधवा बना कर जो कर्म हो रहे हैं। उनमें जो अवस्था पुत्री होने के कारण हत्या बच्चे की हो रही है। देश में नर्क द्वारा खुला कर सत्य, ईश्वरीय भक्ति मिट रही है। हे जीवन सुधार, न उजड़ना कम हो रहा है–

हे भारत और विश्व के लोगो! ज्ञानी हो तपस्वी या सच्चे धर्म के प्रवक्ता हो तो बदलो। ज्ञान उपदेश सुनाकर कि महर्षि दयानन्द ने सत्य की खोज की, घर बार छोड़ा नर्क को मिटाने के लिए **"कृण्वन्तौ विश्वमार्यम्"** के मंत्र से अखंडता एक आर्य राष्ट्र नीव पर क्यों जोर दिया? उनकी गवेषणा की जाये। निर्गुण ईश्वर विश्वासी शुभ कर्मों के लोगों का बढ़ना तथा बुद्धि से अहंकार को दूर करके सत्य ज्ञान, शुद्ध अन्तःकरण बनाकर शुद्धि ही अमरता है।

(शुद्धि समाचार–जनवरी 2010)
दिल्ली

ईसाः जो मेरे पीछे लगेगा वह अंधकार में न चलेगा हिन्दू वह है। जो भगवान को माने, मनुष्य को मनुष्य समझे।

नारी का धर्म

जिस प्रकार शरीर की रक्षा आत्मा करती है। उसी प्रकार आत्मा का धर्म है भक्ति रस से परमात्मा की प्राप्ति। और जब शरीर को भूख लगती है उसका धर्म है भूख मिटाकर तृप्ती करना। पर आत्मा की भूख को मिटाने का धर्म है ध्यान। नारी का धर्म, अपने सत की रक्षा करना, गर्भाधान से सन्तान मैथनी शक्ति से उत्पन्न करके सन्तान की हर भूख व्यवस्था का ध्यान देकर पालन पोषण करके सुख देना फिर सन्तान से भी सुख लेना। भारतीय प्राचीन संस्कृति ने भारतीय जीवन में सत्व से पुण्य धर्म के जो संस्कारों की प्रेरणा दी है, वह नारी का सत्कार और उसकी रक्षा है। क्योंकि वह अबला है, कमजोर आत्मा है और जिस व्यक्ति, समाज, राष्ट्र ने नारी की शक्ति को हीनता से देखा, वह सब से नाशक और दुष्ट हैं।

इतिहास इसका साक्षी है। रावण ने सीता का निरादर किया, नष्ट हो गया। कंस ने बहन देवकी को आंच दी, उसके पुत्र कृष्ण के हाथों बध हुआ।

महान आत्माओं ने ज्ञान पाकर नारी के ऊपर अपनी अपनी विचार धारा व्यक्त की हैं। महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक (Women In India) में लिखा है। जीवन में कुछ पवित्र धार्मिक हैं स्त्रियां उसकी विशेष सुरंक्षिकाए हैं। चाणक्य नीतिज्ञय के शब्द हैं–जिस घर में स्त्री जाति का अनादर होता है–वहां लक्ष्मी धर्म सुःख का वास उठता जाता है वार्डन लेखक ने लिखा है एक अच्छी माता सौ शिक्षकों के बराबर होती है। महर्षि दयानन्द तो भारतीय संस्कृति के नारी सुधारक थे। उन्होंने नारी को समानता, शिक्षा, धर्म कार्य में परिवार के संचालन में पूजा करने में समाज के हर प्रबन्ध में बराबरी भागेदारी देना जोड़ दिया।

महर्षि जी के चार आश्रमों पर विचार करें। नारी की उत्पत्ति खान गृहस्थ आश्रम को सबसे पवित्र माना और सारे दूसरे आश्रमों ब्रह्मचर्य लो, वानप्रस्थ लो, सन्यास लो, का अस्तित्व जड़ (Back Bone) कहा। उनके अन्दर नारी के लिए इतना आदर था कि जब छोटी बड़ी नारी पुत्री जाते देखते, नम्न दृष्टि से देखकर हाथ जोड़ देते।

हे मानव तू धन्य हो तुझे श्रेष्ठ पुरुष बनाकर जन्म देने वाला कोई नहीं है तेरी पुण्य माता है। अस्तु मत भूल उसको, विनम्रता से जब तक तेरा उसका साथ

है। प्यार से बोल और सेवा करता जायेगा। प्रभु तेरे उपकार का फल देगा। पर जब भारतीय संस्कृति में नारी का दर्शन करते हैं तो महान आत्माओं के पद चिन्हों को नहीं भूलते, क्योंकि उनके संस्कार दाता कोई नहीं था पर पवित्र जन्म माता जिसने अपने वीरता से ऐसे महान पुत्रों को जन्म दिया। मर्यादा पुरूषोत्तम राम को, कौशल्या ने जन्म दिया, योगी श्री कृष्ण को, देवकी माता ने महान् ज्ञानी योगी, गीता के उपदेश सुनाकर अर्जुन को अधर्म का नाश करने की सत्यता का ज्ञान दिया और सारे विश्व की आत्मा को सुधारने का कर्म काण्ड का पथ दिया। धन्य हो महर्षि देव दयानन्द के संस्कार जिनकी माता ने उन्हें संसार के उपकार, वेद ईश्वरीय ज्ञान एक सच्चे निराकार शिव भगवान की खोज करने के लिए जन्म दिया। फिर उन्हीं संस्कारों के बल ने अंधविश्वास, अज्ञानता को दूर करने का प्रचार किया तथा नारी जाति को हर कर्म करने का स्वतन्त्र बल की शिक्षा दी। पूजा हो, शिक्षा हो, समाज हो, राष्ट्र का नेतृत्व करने में बराबरी की भागेदारी का प्रचार किया। पर जिसने भी नारी का निरादर किया वह अग्नि में भस्म हुआ। द्रोपदी के निरादर ने द्रयोधन का नाश कराया। अस्तु नारी की खान को पहचानो उसके कष्टों को समझो जब बच्चा जन्म लेता है वह गीले विस्तर पर सोती हैं, बच्चे को सुःख देती हैं। वह तो गृहलक्ष्मी है। रसोई की सेविका है, पति की अर्दाग्नी, रेल की पटरी, हर दुःख सुःख की भागी है।

वह सहनशीलता, पवित्रता की देवी है, परिवार की हितैषी है, पति, सन्तान की मृगनन्नैनी सुन्दर, मधुर ध्वनि है। परिवार उसके ईशारे पर चलने पर सुःख पाता है। यह भी सत्य है कि हर पुरुष की प्रगति, धार्मिक संस्कारों के पीछे नारी की शक्ति है। पर जो नारी को बुरे व्यवहार से पेश होता है। वह कभी सुःख नहीं पाता। नारी एक स्वाभिमान की शक्ति धर्म पालक है। कोई उसके सत पर आंच लगाये वह पहले प्रतिरोध करती है। पर जब बेबस हो जाती तो प्रतिशोध की भावना नहीं छोड़ती।

इतिहास साक्षी हैः पदमनी चित्तौड़ की सुन्दरी रानी पर महमूद गजनी ने पाने के लिए बुरी दृष्टि वासना से पूर्ति करना चाहता था। क्या मिला-राजपूतानियों का प्रतिशोध, सती करके अग्नि की खाक, उसे मुँह की खानी पड़ी। अकबर की महानता की प्रशंसा तो इतिहासकार करते हैं पर उस चरित्रहीन बादशाह की बात सुनो। मीना बाजार का लगाना षड़यन्त्र था, लूटना भेंट लेकर भी नारी पर शोषण करके। रानी किरन बीकानेर के राजपूत राजा की सुन्दर नारी ने एक बार मजा चखाया। मीना बाजार में भूषण खरीदते समय अकबर की दासी ने अकबर का ईशारा पाकर किरन से कहा कि यह क्या भूषण है। महल में चलो इसी बहाने से ले गई, अकबर ने दुर्व्यवहार करना चाहा पर उसने कटार निकाल कर अकबर के होश ठिकाने कर दिये, वह पैरों तले पड़ गया कि फिर ऐसा नहीं करूंगा।

यह नारी का धर्म और इसका चरित्र कब बदलता है, उसका कारण, समाज धर्म और हर पुरुष है। कोई उसे जूती समझता है, नौकरानी समझता है, सताता है, वासनो के पीछे पतन करके तंग करता है, मारता है। जिसके कारण बाहरी शक्तियां, अत्याचार का दुरूपयोग करते हैं। उनको भडकाकर शोषण करते हैं, वैश्यावृत्ति का व्यापार करते हैं फिर वही। हजारों को मोहित करके वासना की तृप्ति (Aids) के कारण एड्स की बीमारियों के अपंग, सन्तान पैदा होती है। यह सब आधुनिक युग की बुराईयों का वल है कि न मां, बहन, बेटी, बहू, सास, को छोड़ते हैं। केवल वासना पूर्ति—समाज क्या केवल चुप रहता है। अस्तु जो तुम्हारी मां बनेगी, बेटी बहू, बहन बनेगी, लज्जा करो अपने दुष्ट कर्मो को त्यागो नहीं तो जीवन भर तड़फते रहोगे। जानो हर पुरुष को ऊपर उठाने वाली स्त्री है कभी-कभी शंकराचार्य की बात पढ़ते हैं कि वह वासना की तृप्ति है या तुलसी दास ने लिखा है, नारी ताड़न की अधिकारी है यह सब को विचारना चाहिए और सोचना चाहिए यदि किसी के घर बेटी हो तो उसके खत्म करने से समस्या हल नहीं हो सकती। नारी की संख्या कम क्यों हो रही, केवल पुरुषों का अत्याचार। हे धर्म, समाज के प्रवक्ता वेद ज्ञान दो सबको कि जब तक नारी को उत्तम आंख से नहीं देखोगे, नारी आगे आकर प्रतिशोध, करके पुरुषों को इन्द्रा गान्धी की तरह दिखा देगी कि शासन कैसे चलाया जाता है यह है नारी धर्म।

अतिथि देवोभव नारी की महानता।

❁❁

कुरानः कथन सच्चा मुसलमान वह है जिसकी वाणी और हाथों में मानवता सुरक्षित होती है

अर्थ; धन की महानता दरिद्रता की दुर्गति

अर्थ-धन अर्थशास्त्र का मूल्यवान विषय मनुष्य के अस्तित्व बनाने का आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति का साधन माना गया है। भारत में इसके अभाव से गरीबी फैली हुई है। जनसंख्या बढ़ती जा रही, साधन उसके अनुपात में बहुत कम है। चीन देश को देखिए, किस प्रकार इतनी संख्या बढ़ने पर भी उत्पादन बढ़ता जा रहा पर देश भक्ति तथा एकता ने हर देश वासी के अन्दर यह उत्तेजना पैदा कर दी है कि हमारा प्रथम कर्तव्य देश की रक्षा तथा समृद्धशील बनाना है। परन्तु भारत में वर्षों की गुलामी तथा विदेशियों की लूट ने सबका पतन कर दिया। सिकन्दर ने धन लूटा यूनान चला गया, महमूद गजनी के सिपाही आये सोमनाथ का मन्दिर लूटकर गुजरात में अपना बुरा इस्लाम का प्रभाव छोड़ गया। तिमुर्लिंग आया सब पर अत्याचार करके जान सम्पत्ति लूटकर चला गया। बाबर मुगल सम्राज्य की नींव डालकर लूटेरा बनकर सब लूटा हुआ धन, अपने मुसलमान साथियों के अतिरिक्त देश में भेजकर यहां धन विहीन करके इस्लाम धर्म की आफत अयोध्या में मस्जिद बनाकर हिन्दुओं का पतन इस्लाम धर्म की आवाज की चर्चा छोड़कर एक सदा के लिए हिन्दू धर्म का नाश करके, मुगल सम्राज्य को स्थापित करके हिन्दुओं के रक्त को गुलाम बना कर इस्लाम का काफराना प्रभाव छोड़ गया। यह ही हमारे विशाल वैदिक संस्कारों के धर्म की अच्छी धारणा है जो घर आया अतिथि हो उसका सत्कार करो। यह सदा हमारे रक्त में रहा और रहेगा। जिसके फलस्वरूप हर लुटेरे ने, चाहे अंग्रेज हो फ्रांसीसी हो पुर्तगाली हो, या अबके नये देश पाकिस्तान, बंगलादेशी हो उनके सामने यही भावनां रही, इस देश को लूटो, तोड़ों, फोड़ो, घूसपैठ करके धन, सम्पति धंर्म सबका नाश करके, अपने संस्कारों, धर्मों से इन हिन्दुओं का अस्तित्व मिटाकर धर्म परिवर्तन करके नाम मिटाकर गरीबी का नाम छोड़ दो। यही मुख्य गरीबी फैलाने का रहस्य रहा कि आज शासकों का ध्यान नई आतंकवादी, फूट अन्य समस्याओं में उलझा रहता है। परन्तु अर्थ जो देश की मुख्य जरूरत है, उसका समाधान करने में असमर्थता और कारण स्वयं उत्पन्न कर रहे हैं। अल्प संख्य को अलग करके उठाना अपने कुर्सी को बचाना। हिन्दूओं को न तो धर्म स्थानों की यात्रा, मानसरोवर (चीन की सीमा पर) जो प्रदेश है, न आर्थिक सहायता देना परन्तु हाजी को हज पर धन देना। क्या अन्याय है न ईसाईयों या सिखों न हिन्दुओं को सुविधा। कोई पूछे क्या यह धन का समानता से उपयोग हो रहा है नहीं

यही कारण गरीबी की बढ़ती हुई दुर्गति है। हर शास्त्र कहता है गरीब रहना शाप है। यह अर्थ जो देश को उठा सकता है, मिटा सकता हैं। अस्तु पाठको मैंने अर्थ का गंभीर विषय लिखने का मन बनाया ताकि हर भारतीय, आर्य वैदिक धर्म अनुयाई यह प्रतीज्ञा ले कि गरीबी मिटाना, अर्थ बढ़ाना हमारा पुण्य धर्म है जो वेदों का ज्ञान, महर्षि दयानंद का लक्ष्य रहा है। उसका पालन करो।

यह अर्थ की आवश्यकता सदा रही, हर युग, हरकाल में और धनी तथा गरीब साथ चलते रहे परन्तु प्राचीनकाल गरीब की इतनी दुर्गति नहीं रही जो आज फैल रही है। यह सत्य है कि काल महाभारत में योगी कृष्ण धन से ऐश्वर्ययुक्त थे, ब्राह्मण सुदामा दरिद्र पर गरीब का शाप हीनता से देखा जाता रहा। महाभारत में धन विहीन व्यक्ति को ग्रीष्म ऋतु की सुखी नदी के समान बताया गया जो ग्रन्थों से पता चलता है।

परमात्मा ने हमें जीवन सफल उपकारक धनवान विद्वान पुरुषार्थी, तथा सुःखी बनाने के लिए बहुत से कर्तव्यों का पालन अच्छे कर्म करने का उपदेश है कि कोई न हो दीन दुःखी सब बलदायक पुष्टी कारक तेजस्वी, सम्पन्न, यशवान, धर्मात्मा तथा धन के ऐश्वर्य के स्वामी हो। पर सफल जीवन के लिए पुरूषार्थ ऐश्वर्य रूप की चार अनूभूतियां धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में अर्थ की अनुभूति जो मनुष्य की आवश्यकताओं का मौलिक कर्तव्यों में महत्व रखता है। उसका उदाहरण धन का होना एक अस्तित्व तथा अर्थशास्त्र में मनुष्य की रीड़ की हड्डी (Back Bone) माना है। वस्तुतः जो धन का उपयोग करेगा यह जानकार मैंने इससे अस्तित्व बनाना है इसलिए मेरा कर्तव्य है कि इसे धर्मयुक्त, सुचारू रूप, समय के अनुसार खर्च करो। जितनी चादर हो पैर फैलाओ। अधिक धन हो दान, तथा सदउपयोग से श्रदा के धर्म के कार्य दान देकर करु। गुरु शंकराचार्य ने अर्थ अनूभूति का दान, मोक्ष का ऐश्वर्य प्राप्त करने का मार्ग कहा है।

परन्तु धन का दुरूपयोग सब आपत्तियों का घर है जिसका कारण है गरीबी "अंग्रेजी में कहा गया" (Poverty is a curse) दरिद्रता शाप है जो मृत्यु से बढ़कर है। अतएव (निर्धनता सर्वापदां पदम) यह एक खाली बोरी की तरह है जो मनुष्य की प्रतिष्ठा नहीं देता, समाज में खड़ा तभी रह सकता है जब मनुष्य के पास धन हो जेब भर जाये तभी भरी बोरी की तरह समाज में खड़ा होने का स्थान पा सकता है। गरीबी कर्मों का फल है। जो बोया वह काटना पड़ेगा। प्रारब्ध को गरीबी का दोष देते हैं वह अज्ञानता है। यह भारत की गरीबी की दुर्गति है, "दरिद्रता दुर्गती" यह गरीबी की दशा प्रातः सब लोग देखकर हर भारतीय को चोट लगती है कि हमारा देश कितना अभाग्यशाली है गरीबी यहां से भागती नहीं, । यहां के लोगों ने इतने पाप कर्म किए हैं कि सोने की चिड़िया मरूभूमि की तरह उजड़ रही है। बेरोजगारी बढ़ रही है। किसान भूमि का स्वामी धन के अभाव में हत्या कर रहा है" ऐसे दृश्य देखकर मन चिन्ता में पड़ जाता है जब भिखारी प्रातः ही कहता है—एक पैसा दो, बासी रोटी का टुकड़ा दो, फटा पुराना कपड़ा तन डांपने को दो, सर्दी से ठिठर रहा हूँ। रब (परमात्मा) भला करे सुहाग बना रहे, बच्चे जीते रहे, हाथ जोड़ रहा हूँ। यह

दर्द है अर्थ विहीन व्यक्ति, भारत का चित्र जिसका रक्षक है वह भगवान जो कमी को सुधार कर आत्मा को सुधरा देखकर जीवन में नया प्रकाश देता है। वह होगी कर्मों की शक्ति, धन का ऐश्वर्य, दरिद्रता का पतन। पर इस दुर्गति पर अकुंश लगाना जरूरी है यदि मनुष्य धर्म का सच्चा अर्थ पुरुषार्थक बनाकर सदा श्रम करके अपना उद्देश्य न्याय से धन कमाये, न्याय से व्यय करे, गरीबी की दुर्गति से बचे वह है "सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति" धन का अर्थ है धर्मयुक्त प्रयोजन बनाना, अन्याय, दुखित अवस्था बनाकर प्रलोभनों से धन को डायन रूप की ओर ले जायेगा। कहने का तात्पर्य है गरीबी का ज्वाला मुखी जब भूख से तड़फकर फटता है शारीरिक, मानसिक आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, अध्यात्मिक शक्तियां नाश कर देता है पुर्नवसु के अनुसार प्रज्ञाप्राथो। बुद्धि नाश होने से भूख बुराईयों के जाल में धसा देती है। न मां न बेटी न बहन न साली न पत्नी और रिश्ते नजर आते हैं केवल भूख की तृष्णा रोटी बिल्ली की तरह छीनता है धरती से सड़ी हुई वस्तुएं उठाता है, बच्चे बेचता है। अपनी पत्नी को जुए या वैश्यावृत्ति में धकेल कर धन पाकर सब परिवार की भूख मिटाता है। फिर कहते हैं। (Habit is the Second Nature) वही स्वभाव दूसरों को जबरन इस वासनाओं की पूर्ति में साथ मिला कर वैश्य, शराब चोरी के अड्डे बनाकर समाज, राष्ट्र को मोहरा बनाकर कोई धर्म को ही मिलाकर दुराचार आतंकबाद फैलाकर तोड़ फोड़ करके भारत का नाशक बन जाता है। यह दरिद्रता की दुर्गति है।

पाठको विषय अधूरा है पर यदि भारत के सुधारक धार्मिक आत्माएं, अर्थ की उपयोगिता तथा गरीबी की दुगर्ति न विचारेंगे तो यह समस्या उन दुष्टों के कारण देश के शत्रुओं के हाथ में आ जायेगी जो फूट डालकर नया मुसलमानों का पाकिस्तान, सिखों का खालीस्थान बंगला देश को धन पाने की बुराई, घरों-घरों में चोरी, जगह-जगह विस्फोट जो हम हैदराबाद, इलाहाबाद, फैजाबाद लखनऊ, मुम्बई आदि शहर में देखकर दहल जाते हैं। प्रभु का वेद ज्ञान सबको सद्बुद्धि दे कि गरीबी दूर भागे, अर्थ ही अर्थ की फुलवाड़ी फैले और शान्ति का हर व्यक्ति सांस लेकर सुगन्ध ऐसी फैले कि गरीबी कोसौं दूर भागे यह है अर्थ का ज्ञान और उपयोग्यता प्रभु वह प्रार्थना स्वीकार कर।

कोई कहे-क्या

1. "सूखे खेती धान सड़े"
मन सड़े तन घटे
धन घटे गरीबी बढ़े

2. दरिद्रता का सबसे बड़ा शाप है
असन्तोष, तथा अभाव बोध

सत्संग

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। (Man is a Social Animal) समाज का अस्तित्व जन्म से आरंभ होता है, मरण तक चलते-चलते अन्त होता है। सत्संग से बढ़कर कोई बड़ी यात्रा नहीं है। सत्संग से ही अबुद्धिमान बुद्धिमान बनकर जीवन को सत्य मोड़ पर डालकर अनर्थ कर्मों को त्यागकर चरित्र का निर्माण करता है। गायत्री मन्त्र के पाठ ने ही गायत्री मां के सहयोग से शिव भगवान ने सिद्धि का कल्याण मार्ग खोजा था।

कहते हैं एक परिवार की सास की उसकी पुत्र वधु ने इतनी सेवा की कि उसने यह शब्द कहे। बेटी मैं अपना जीवन पूरा करने जा रही हूँ मांग तू जो इच्छा है, क्योंकि तेरी अपार सेवा से मैं अति प्रसन्न हूँ। पुत्र वधु ने कहा मुझे तेरी सद्बुद्धि चाहिए। वह हंसी बहू को प्यार से चूमकर कहा तूने मुझे ही (सत्संग) मांग लिया। यह है सत्संग की शक्ति।

गीता में सत्संग को बहुत उच्चतत्व मार्ग कहते हुए यह वर्णन किया है।''

न गेधपति मां योग न सांख्यं धर्म एवम च।
न स्वध्यायस्तपस्त्यागो नेष्ट पूर्त न दक्षिणा ॥
व्रतानि यंज्ञश्छन्दासि तीर्थानि नियमा यमाः।
यथा वारून्धे सन्सङ्गः सर्वसङ्गापहो हिमाम ॥

जगत में जितनी भी आसक्तियां हैं उन्हें सत्संग नष्ट कर देता है यही कारण है कि जिस प्रकार मनुष्य को स्वंय को वश में कर लेता है, तथापि उसको उस सत्य स्वरूप प्रभु की भक्ति साधना श्रेया बनाकर प्रभु भी अपने स्नेह को देखकर योगज्ञानेन्द्रियों की शक्ति से अपनी ओर प्रेरित कर लेता है। फिर मनुष्य के अन्दर संसार की सभी योगक्षेम (वस्तुए एकत्रित करना) की चिन्ता मुक्त हो जाती है। अस्तु सत्संग द्वारा जो मिलन प्रभु से ग्रहण करता है वह न संख्या, न धर्म पालन, न स्वाध्याय तपस्या त्याग, इष्टापूर्ण दक्षिणा के प्रभु प्रसन्न नहीं होता जितना सत्संग।

कहने का तात्पर्य यह है कि सत्संग ही आत्मा के विलक्षण ज्ञान वल से मनुष्य को मनुष्य मनुर्भव के भाव पैदा करता है। यह भी सत्य स्वीकार करना पड़ेगा कि

सभी व्रत यज्ञ वेद तीर्थ और यम नियम भी सतसङ्ग समान, प्रभु भक्ति की साधना उतनी शक्तियों का निर्माण युक्त नहीं कहे जा सकते जितना सत्संग की फुलवाड़ी का मेल, उपदेश ज्ञान रस मानव को बदल सकता है। श्रदानन्द जी का जीवन सत्संग की श्रदा के मुंशीराम की जगह श्रदानन्द क्यों बना। यह भी सत्संग का कारण था।

पिता नानक चन्द कथावाचक, पुलिस अफसर सत्संग करते थे। एक प्रसंग सुनाया कि वह भी महान है जिसने बुरे कर्म करने के पश्चात पश्चयाताप कर लिया हो। झट मुलजिम सत्संग का प्रेमी कहते हुए उठा, मैं कसूरवार हूँ, कसूर स्वीकार करता हैं, हत्या करने का जो दण्ड देना है, स्वीकार करता हूँ। कहकर नानक चन्द के चरणों में गिर गया। उसी सत्संग ने मुंशीराम का जीवन महर्षि दयानन्द के उपदेश के दौरान, शिष्य बना दिया। वह लग गये आर्य समाज के सत्संग में आज ऋषिकेश की गुरूकुल वाटिका उनके सत्संग का प्रभाव है श्रदानन्द का सत्संग की दीक्षा है।

पाठको आर्यसमाज के सत्संग की वाटिका क्यों बनी, क्योंकि महर्षि जी को स्वामी विरजानन्द का सत्संग का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह ज्ञान रस पाकर महर्षि दयानन्द वेद ईश्वरीय ज्ञान के निराकार प्रभु के साधक चल पड़े संसार की उपकारक यात्रा पर। उन्हीं ने आर्य समाज की सत्संग वाटिका में वह ज्ञान रस, अंधविश्वास मूर्तिपूजा की अज्ञानता को मिटाने के साथ, नारी को जो बराबरी की भागेदारी बनाया उनके चरणों की जिज्ञासा स्वतन्त्र सेनानी रानी झांसी, तात्या टोपो की श्रदा सदा स्मरणीय है। कि स्वामी जी के सत्संग ने गऊ की रक्षा तथा भारत स्वतन्त्रता की क्रान्ति का मार्ग अंग्रेजों के विरूद्ध कारतूस में गऊ की चर्बी का मन्त्र बताकर रानी झांसी तात्या तोपो का बलिदान होने का मार्ग दिखाया तथा तीव्र संघर्ष साधना चली। मत भूलो पाठको आर्यसमाज की फुलवाड़ी महासंग टंकारा महर्षि जी का जन्म स्थल सच्ची सत्संग की फुलवाड़ी है। सत्यसंग के स्थल को पहचानो।

❀❀

ईश्वर का नाम सभी जपते है नाम जपने से ईश्वर प्राप्त नहीं होता

(गुरुनानक)

सात्विक, राजसी, तामसिक गुणों का विलक्षण रूप

मनुष्य आत्मा की जीवन यात्रा, भ्रमरों (भवरे) की तरह है जो फूलों के मधुर रस को चूसने के लिए चारों ओर मंडराते रहते हैं। क्योंकि उनका जीना फूलों के रस पर निर्भर होता है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य भी मन की भावनाओं तथा आंखों की ज्ञान इन्द्रियों द्वारा भावना युक्त होकर संसार के प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेता रहता है। जिस प्रकार भ्रमरे फूलों को अपना स्थित स्थान समझते हैं, मनुष्य आत्मा का निवास क्षेत्र उसकी माया रूपी देह है। आत्मा ने हाड्डियों का पिंजर का शरीर चोला पहन रखा है और शरीर में प्राण की शक्ति देकर प्रभु ने अपनी मानव आत्मा को गतिशील बना दिया है, ताकि वह शरीर के अंगों को हिलाकर वह कर्म करें जो शुद्ध आचरण वाले हों और मनुष्य को सुःख उपलब्ध करके सुःखों की वर्षा, और प्रभु की अनुभूतियों से संसार में दीर्घआयु भोग। कोई ऐसा कर्म न करे जो परमेश्वर के विधान, नियम का उलंघन करे। प्रभु ने मनुष्य की आत्मा को कर्म करने की स्वतन्त्रता दी है, जो अपने स्वाभाव प्रकृति रूप से करना ही उसे जीने का अधिकार देता है। उपनिषदों ने इसकी सहमती जतला कर न कर्म करने वाले को जीना न कहा है। कर्म ही आत्मा, देह की शक्ति है और जीवन का मूल्यांकन है। इस पर निर्भर है। वस्तुतः कर्मों का फल प्रभु प्रदान करता है। परन्तु आत्मा शरीर परिवर्तन तब ही पसन्द करता है, जो शरीर बुढ़ापे से क्षीण, रोगी, निकम्मा होकर फैंकने योग्य हो किन्तु नये शरीर में आत्मा का प्रवेश प्रभु के दिये हुए फलों के अनुसार उसी शरीर में होता है, जिन फलों का बीज प्रभु बोकर शरीर को भोगना है। यह ही आत्मा का सिद्धान्त और यात्रा है।

मनुष्य आत्मा यदि पवित्र यात्रा करती है उसे शुभ कहा है और जो कर्म किया जाता है उसका फल भी प्रभु शुभ देता है। परन्तु अशुभ अपवित्र कार्मों की यात्रा दुःखदायक और उनका फल जन्मों जन्म नाना प्रकार की योनियों में भटकते रहना। शुभ कर्मों की उपज महान आत्माओं के रूप में पुरुषोत्तम राम, योगी कृष्ण, महर्षि दयानन्द, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमोहिंसा गुरू नानक, गौतम बुद्ध, महावीर, ध्रुवतारा आदि। अशुभ कर्मों का रहस्य, रावण पापी, कंस, दुर्योधन आदि।

पर आत्मा का मूल्यांकन विस्तार क्या है। गीता में तेहरवें अध्याय में स्पष्टता यक्त की है।

"इदं शरीरं कौतन्य क्षेत्र मित्यमिधीयते।
सतयो वेति तं प्राहुः क्षेत्र इति ताद्धदः।

यह देह क्षेत्र जैसा भी है, इसे तत्वदर्शी क्षेत्रज्ञ कहते हैं। यह सूक्ष्म आत्मा समान सब शरीरों में विद्यामान है। बहुधा ऋषियों ने पृथक-पृथक नाना प्रकार से गाया है, व्यक्त किया है। अर्थात् महाभूत, अहंकार, बुद्धि, कारण शरीर मन, दस इन्द्रियों, पांच कर्म, पांच ज्ञान, और इन्द्रियों के पांच विषय इच्छा, द्वेष, सुःख, दुःख का संघात, देह परस्पर आकर्षण शक्ति धैर्य, विकारों का उत्पन्न होना, यह सब आत्मा का क्षेत्र है।

क्षेत्र के ज्ञान का वर्णन, अमानपन, अहिंसा, क्षमा, सरलता, गुरूजनों की सेवा, पवित्रता, स्थिरता, दमन, इन्द्रियों में वैराग्य (बन्धनों से मुक्त) जन्म, योवन, बुढ़ापा, मृत्यु, रोग, दुःख आदि शरीरिक कमीयों को जानना। पर कर्म करते समय-मोह, माया, लोभ, क्रोध आदि में न लिप्त होना। आत्म ज्ञान में स्थिरपन वस्तुओं, पदार्थों के गुण, अवगुण का आश्यक समझना।

तत्वदर्शी बारे में मुनियों, ऋषियों ने विशेष रूप से नारद जी ने प्रकृति से तीन प्रकार की श्रद्धा उत्पन्न होना कहा है। (1) सात्विक (2) राजसी, (3) तामसिक जिन्हें नारद जी ने संसार का (जगत) का कारण कहा है। धार्मिक ग्रन्थों, वेदों में सृष्टि की रचना प्रकृति के आधार को उपादान कारण कहा है। परन्तु दुःखों सुःखों का भोगना, स्वयं पुरुष आत्मा को कारण कहा है। पुरुष प्रकृति में रहते हुए प्रकृति से उत्पन्न हुए गुणों (तत्वों) को भोगता है। शुभ अशुभ कर्म प्रकृति के सत्वादि गुणों का संयोग ही मनुष्य बार-बार जन्मों, योनियों में आना जाना करता है। क्योंकि शुभ कर्मों का फल उत्कृष्ट रूप में श्रेष्ठ योनि प्राप्त करना। अशुभ कर्म सदा दुःखों और नाश का मार्ग होता है। बुराईयां, प्रलोभन ,संसारिक मोह माया जाल में शरीर की इन्द्रियों द्वारा मन को फुसलाना, बुद्धि को मन को खेंचकर अनर्थ बुरे कर्मों की ओर ले जाकर नष्ट करना। इनके फलस्वरूप मनुष्य जन्म, मरण के चक्रों में घूम कर नाना प्रकार की योनियों में भटकता है। परन्तु प्रकृति के तीन गुण सात्विक, राजसी, तामसी, का कर्मों में महान योग होता है। उनकी समीक्षा जरूरी है। जो उसके आश्रित हैं।

1. सात्विक गुण : श्वेत वर्ण वाला होता है सुःख, आनन्द दायक, शान्ति प्रिय, अध्यात्मिक, दैविक कर्मों की अनुभूतियों की प्रेरणा से प्राप्त होते हैं। यह मनुष्य को धर्म कर्म, तथा शास्त्रों में रूचि पैदा करते हैं। सत भाव, श्रदा, क्षमा, धैर्य, सन्तोष, सत बुद्धि, लज्जा शान्ति, दमन, सुःख देकर सम्पन्न बनाते हैं। मनुष्य का मन, देह को प्रसन्ता देकर जीवन को विजय, सूक्ष्म, सक्षम बनाते हैं। ऐसे अनुपम गुणों की उपज के महान आत्मा, कल्याण कार्य के इच्छुक, तथा सच्ची श्रद्धा वाले होते हैं यही

कारण है आज आर्य जगत की प्रगति, जागृति महर्षि दयानन्द जैसी कल्याण कारी आत्मा के पीछे, उनके हर पदचिन्हों को सतगुणों से युक्त जानकर, अध्यात्मिक शक्ति के बल को सब अपना श्रेय देते हैं। सात्विक गुण कभी भी परिलिक्षित नहीं होता। सज्ज्नता प्रीति, विनम्रता, सहानभूति, सहनशीलता, उपकार यह सब सात्विक संस्कारों की उपज हैं। यह बढ़ने पर देहधारी मृत्यु पाकर उत्तम ज्ञानियों के निर्मल लोकों को पाते हैं। यह दोष रहित, सत्व सुःख ज्ञान लाल से देह को बाधते हैं। अर्थात

तत्र सत्वं निर्मलत्व प्रकाशक मनायम।
सुःख सङ्गेन बध्नाति ज्ञान संङ्गेन चानध॥

(गीता 14 अध्याय)

अर्थात् ज्ञान विचार सुबुद्धि, सावधानी, सत्कर्म, कर्तव्य पालन, सेवा परहित, साधन, पुरुषार्थ, ब्रह्मचर्य, तप, उपासना, समता, सन्तुष्टी, त्याग, स्नेह, प्रभु भक्ति यह सब सात्विक गुण हैं।

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्विक

रजोगुणः रक्त वर्ण वाला, दुःख दायक, राग रूप, तृष्णा, कामना से उत्पन्न होता है। गीता कहती है "रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णा सङ्गभुद्म क्रियाशीलता, अति लोभ, तृष्णा, प्रबल कामना, स्वार्थपरता, अप्रीति अश्चर्य गुण हैं। रजोगुणों की बुद्धि से किसी की तृप्ति नहीं होती। भगत कबीर ने माया रूपि लोभ को कोलू के बैल की तरह सरसों को पीसकर तेल में बनाना : अस्तु मनुष्य लोभ के रूप में इतना अंधा हो जाता है कि शरीर टुकड़े हो जाता है। असक्ति मोह तृष्णा राग, तृष्णा से उत्पन्न होते हैं। ईर्ष्या, द्रोह, स्तम्भन, निद्रा, अभिमान, गर्व, राजसी श्रद्धा के मूल तत्व हैं। यह कर्म लालसा से देह को जड़ता है। अर्थात्–

"तन्निवध्नाति कौतन्य कर्म सङ्गेन"

तमोगुण–कृष्ण वर्ण वाला, भ्रम (शंका) चिन्ता, निराशा, तथा क्रोधित हिंसक भावनाओं से पैदा होता है। हत्या कारण वन जाता है। अंग्रेजी में सत कहा है। "Anger Creates Confusion Confusion Creates Frustration, Frustration Creates and Leads to Suicidal Tendencies" क्रोध शंका पैदा करता है, शंका निराशा उत्पन्न करता है, निराशा आत्म हत्या की ओर ले जाता है। भारत देश इनके ओप-प्रोत में फंसा रहता है। लाखों किसान ऋण, वर्षा के न आने से फसल नष्ट होने से इन्हीं के कारण आत्म हत्या कर देते हैं। यही विद्यार्थियों की दशा है, विद्या में पास न होने से मरण को अपना क्रोध बनाकर तामसिक प्रवृत्ति के क्रोध को कारण बनाते हैं। तामसिक प्रवृत्ति को अतिपीड़ा युक्त दुःख कहा है।

सात्विक, राजसी, तामसिक गुणों का प्रभाव–यह तीनों तत्व अकेले नहीं रहते, एक-दूसरे पर आश्रित और भावनाओं में मिश्रित प्रकृति से उत्पन्न होते हैं। शास्त्रों के

अनुसार सतगुणों की उन्नति बड़ी तीव्रता से वृद्धि होती है। तामस पदार्थों के प्रति वैराग्य हो जाता है। रज, तम दोनों को दबा देता है। लोभ के कारण रजोगुण अति तीव्र हो जाता है, बढ़ा हुआ रजोगुण सत्व तम दोनों को दबा देता है। पर तमोगुण मोह के कारण तीव्र हो जाता है। सत्व गुणों, रजोगुणों को दोनों को दबा देता है। सत्वगुण बढ़ने से बुद्धि, धर्म, स्थित रहता है। रजोगुण, तमोगुण से उत्पन्न ब्रह्म विषयों पर चिन्ता नहीं करता उस समय सत्व गुण होने से कार्य को अपनाता है। अन्य क्लेश, दुःखदायक कार्यों में नहीं फंसता। बुद्धि बिना प्रयत्न धर्म, यज्ञादि कर्म से प्रवृत्त हो जाता है। मोक्ष के इच्छुक, आत्मकल्याणी सात्विक पदार्थों के भोगने से प्रेरणा पाते हैं। राजसी लोभ में नहीं फंसते, जब तामसी का प्रश्न कहां उत्पन्न होगा। रजस, तमस को जीवन के सत्व गुणों की वृद्धि होती है। रजस धन में लीन होकर फंसकर, पीछा नहीं छोड़ता। सत्व गुणों को दूर करके, बिल्ली की तरह लोभ की पूर्ति के लिए झपट कर कुत्ते के मुंह से हड्डी की तरह रक्त निकाल कर, नाश करता है। लोभ की बृद्धि में धर्म शास्त्र, प्रभु विश्वास नहीं रहता। रजोगुण की बृद्धि मरे हुए मनुष्य को अज्ञानमय जन्मों को प्राप्त करता है। वह धन का दुरूपयोग, नशीले पदार्थों, प्रलोभनों का दास बनकर उलट गिरकर मदहोश हो जाता है। तीनों गुणों का उत्पन्न होना प्रकृतिक स्वाभाव है। एक दूसरे के प्रभात का चक्र चलता रहता है। जिस प्रकार मिट्टी का लोंदा डाला घड़ा बनाकर तैयार क्रिया जाता है। इसी प्रकार तीनों गुण परस्पर यग्म भाव को प्राप्त रहते हैं अस्तु मनुष्य का जीवन वही विकासशील बना सकता है जो इन तीनों गुणों को सन्तुलित उपयोग, मर्यादा जानकर जीवन के अस्तित्व पर पूरा उतरता है, तभी देह क्षेत्र आत्मा सुख की ओर बढ़ती है, आत्म सम्मान बढ़ता है, आत्मा राग, द्वेष, लोभ रहित होकर आनन्द प्राप्त (यह ही मनुष्य यात्रा की पूर्ति है) करके प्रभु को शुद्ध होकर समर्पित करती है। यह ही यात्रा है।

वह मनुष्य सच्चा धनी है जो गुणों से सम्पन्न हो, गुणों का खजाना हो

Treasury

क्रोध, ईर्ष्या, निराशा, चिन्ता, लोभ को पास भटकने मत दो

(ओरीस स्वेट मार्डन)

जीवन की सत्यता का मार्ग उपासना

मानव का जीवन घटनाओं, परिस्थितियों असमंजस की उलझनों में फंसा रहता है। चिन्ताओं, असफलताओं के ओत-प्रोत में रहता है। जीवन की यथार्थ यात्रा से दूर जाने लगता है। जीने की कला को भूल जाता है। जगत के असत अधंकार को अपनाने लगता है। यह अंधकार है—तृष्णाएं, काम, मोह, लोभ, माया, प्रलोभन, भोग विलास, प्रकृतिक आकर्षित की सुन्दर, रमणिक पदार्थ वस्तुएं। उनको अपना मार्ग अपनाता है, यह समझकर कि यही ही जीवन को सुःख, आनन्द, तृप्ती, पूर्ति पाने के सत्य पथ हैं। वह इन्हीं की माया जाल में फंसा रहता है और जितना इनके निकट जाने का संकल्प बनाता है, आफ्तों, कष्टों को अपना घर बनाता है। यह बनावटी, सजना, पहनना तृष्णाओं की पूर्ति के लिए शराब, नशीले पदार्थ, मोह, माया, धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य के मार्ग नहीं। जरा विचार करिये जो व्यक्ति समाज, राष्ट्र, देश सत्य की कसौटी को जीवन में नहीं भांपता दुःख, सुख, कष्ट जो साथ-साथ चलने के (मार्ग हैं) सुख पाने की मर्यादा को न सहन कर सदा दुःखों की आफ्तों में मकड़ी की तरह जाल में फंसा रहता है नष्ट हो जाता है। महान योग वल के सच्चे पथ देने वाले श्री अरविन्द घोष को आज हर व्यक्ति पंडीचेरी के योग स्थल को देखकर याद करता है। क्यों? वह सत्य पर चले। उनके अनुसार जो सत्य को लेकर निर्माण करते हैं वह कभी असत मार्ग पर नहीं चलते। कोई उनकी सत्य की नींव को नाश नहीं कर सकता।

महर्षि दयानन्द देव का आधार सत्य भगवान शिव की खोज, वेद ईश्वरीय ज्ञान, अंधविश्वास मूर्ति पूजा, अधर्म को त्याग, उत्पन्न करने वाले निराकार प्रभु जन्म देवी जननी की सत्कार समानता, शिक्षा, ज्ञान का बल, आत्म विश्वास, यह सब सत्य की अनुभूतियों के लक्ष्यों ने आज 133 वर्ष हो गये, पर आर्य समाज फलती फूलती है। परन्तु कुछ रूढ़ीवादं समय के परिवर्तन को न समझते हैं। केवल कटाक्ष त्रुटियां निकालते रहते हैं, कथनी कुछ होती है, करनी कुछ। मुझे याद है एक लेख, पुस्तक में मैंने ॐ ऐसे लिखा, झट पत्र मिला यह वेदों के प्रतिकूल है, ओउम ऐसा लिखना चाहिए। क्या टंकारा में भाग लेने वाली समाजों के ध्वजों में यह 'ॐ' लिखा वेदों के विरूद्ध था। कहने का तात्पर्य यह है हर बात का अपने ज्ञान स्वार्थ से कहना मतभेद पैदा करने के कारण बन जाते हैं। आज समाजों का बल विखर रहा है, क्योंकि वह

असली कार्य जो शुद्धता सत्यता से कुछ विद्वान सच्चे आर्य अनुयायी चला रहे हैं पर कुछ क्यों कुर्सी की भूख स्वार्थ बना कर समाजों को कमजोर बनाते हैं।

उदाहरण लो, स्वामी श्रद्धानन्द के फूल, आत्मा को बुराईयों से त्यागना, धर्म परिवर्तन बचाना शुद्धि कार्य को बड़े स्तर पर फैला कर आर्यों, हिन्दुओं की संख्या को बढ़ाना। वेदों की सत्य का प्रचार शिक्षा का बल दरिद्रता को मिटाना जात-पात बंधन सुरक्षा देकर एक फूट पैदा करना है जो राष्ट्र, धर्म समाज के शत्रुता के ढंग है। श्रदानन्द जी ने बुराईयों को जीवन से परे हटाया डटगये महर्षि जी के वेद ज्ञान के उपदेश के पीछे, आज नमन करते हैं। उस शुद्धि देवता की यादों को जिन्होंने जीवन गोली खा कर अन्त किया।

मनुष्य का परम कर्तव्य का बल है आत्मा का आनन्द जीवन को सुखी बनाना सत्य पर चलना, आत्मा के लक्ष्य प्रभु प्राप्ति के साधन जुटाना। बिखरे चंचल मन में दमन धर्म का पालन करके प्रभु भक्ति से योग बल से आत्मा का मनन करके चंचल मन की बंदर की आदतों से हटाकर, एकाग्रता लाकर भावनाओं में विश्वास की धारणा से मन आत्मा को प्रभु से मिलाना। वेदों ने इन सबका मार्ग दर्शन वेद ईश्वरीय ज्ञान देकर सत्य विद्याओं का ज्ञान बताया। श्री कृष्ण ने गीता में बेदों के सार को कहा है, 'वेदान सामवेदोऽस्मि' वेदों में मैं समवेद हूँ। ''मनुर्भव जन्या दैव्यं जन्म'' वेद के स्वाध्याय से मन मस्तिष्क में बैठ जाती है कि यह संसार परमात्मा ने रचा है। मनुष्य जैसे कर्म करता है वैसे फल पाता है। अविद्या जो उपासना का अर्थ, परमात्मा के समीप पहुँचने का साधन है, सामवेद ही उसका ज्ञान, परमात्मा के मिलाने का कोष है। जो पढ़ता है वह तैरकर आत्मा का आनन्द मोक्ष पाता है। आईये इस मन्त्र से आत्मा का प्रकाश पायें। प्रभु से याचना करें। (39 मन्त्र/99 (11) छन्द)

''ओह्म उदुत्यं जाततेदसं देवं वहन्ति केतवा–

दृशे विश्वाये सूर्यम। भावार्थः

जिसमें चारों बेद प्रकट हुए हैं (ऋग्वेद, यजर्वेद,सामवेद, अथर्वेद) जो सर्वव्याप्त हैं। जो सर्व जगत् को जानता है और सब जगत का उपादक है; उस देव ने चराचर जगत के संचालक, सव जीवादि जगत के परमेश्वर प्रकाशित की विश्व विद्या की प्राप्ति के लिए, हम लोग उपासना करते हैं। वेदों की श्रुतियां और जगत की रचना विशेष तर्क विर्तक के साथ उस परमेश्वर को जानते और प्राप्त करते हैं। हम लोग उस संसार के स्वामी सर्वव्यापी परमेश्वर की उपासना करें। अन्य किसी की नहीं। गीता सत्य कहती है काहे बन्धे तू हे गुरूद्वारों, मन्दिरों, मस्जिदों, गिरजों में चक्कर लगाता हैं वह तो शरीर में आत्मा के साथ दाता सूक्ष्म निराकर बसता हैं–

समय का ध्यान उन्नति तथा हृदय की विशालता का स्वर्ग है।

(तिरुवल्लतर)

मानव शांति के दुष्ट तत्व

अति स्नेह या असिक्त में फंसना मकड़ी की तरह कैद है।

जीवन एक मझदार की तरह है। उसकी दो अवस्था पाई जाती हैं। जागने की अवस्था तथा सुषुप्ति अवस्था। जागृत अवस्था में मनुष्य के ज्ञान चक्षु से सब कुछ स्पष्ट देखते हैं, परखते हैं, फिर तृप्त करने के बन्धनों में इतना अति लुप्त हो जाते हैं कि एक विशेष वासना की तृप्ती के कारण वह नं मिलने पर दुःखी हो जाते हैं। यह अति की भावना से मनुष्य को स्वर्ग द्वार के स्थान नर्क द्वार, अंधकार अंधविश्वास, असत्य घृणा का रूप मिलता है जो उसे मोक्ष के खुले द्वार को पाने को असर्मथ बना कर उस पक्षी की तरह बना देता है जो सदा अपने घोंसले में बैठा असिक्त (लुप्त) बना रहता है। उसकी बुद्धि खो जाती है। सुषुप्ति अवस्था क्षण भर की स्वप्न की तरह होती है।

जागृत अवस्था सुःख दुःख की होती है। सुख मिले तो प्रसन्नता, मानसिक आनन्द, दुःख हो बबूल वृक्ष की तरह कांटे। पर जागृत अवस्था का एक पहलू होता है मर्यादा और सीमा में रहकर सत्य का प्रतिपादन स्वर्ग के खुले द्वार अर्थात मोक्ष, शान्ति आनन्द की प्रप्ति। परन्तु यदि मनुष्य अपनी ईच्छाओं की मर्यादा सीमा को पार करके भोगता है और अति की धारणा में लीन हो जाता है, वह दुःख का भागी बनता। यह ही दो व्यवस्था हैं। जिस पर जगत चलता है धर्म आचरण का पालन होता है, व्यवहारों तथा आपसी मेल की शक्तियों के निर्माण से आखण्डता का रूप उत्पन्न होता है। जरा ध्यान से सोचिये मर्यादा में या बाहर जाने से क्या परिणाम होता है। लाल मिर्च चखने का स्वाद बनाती है, किन्तु इसका अति प्रयोग जिह्वा को या तो काटेगी, मनुष्य सी करेगा, फिर न लेकर जो चख चुका उसका प्रभाव जिह्वा को काटना, छाले पड़ना अथवा गले में खारिश होगी। कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य के अति की भावना या यूँ कहिये कि उसकी अति स्नेह असिक्त की भावना नाश और नर्क के मार्ग पर चलने का कारण बनकर बुद्धि अपनी स्वतन्त्रता खोकर दीन हो जायेगी और अत्यन्त क्लेश का कारण बनकर उस कबूतर कबूतरी की तरह अवस्था भोगेगी जो दीन दुनिया और सबको भूलकर अपने आप में इतना अति असिक्त हुए कि उनका अन्त नाश बन गया।

किसी पेड़ पर दो मादा मादी, कबूतर कबूतरी घोंसला बनाकर निवास करते थे। दोनों एक दूसरे के हित, रक्षा, अवश्यकता विपत्तियों, कष्टों के सच्चे देख भाल के प्रयत्नशील थे। चोंच से चोंच मिला लगाकर मुँह चाटना यह उनका प्यार का बन्धन था। गृहस्थ ने गर्भ से दो बच्चों को पैदा किया। वह दोनों उन्हीं के असिक्त रहते, फंसे रहते हर चिन्ता उन पर रहती। कुछ बड़ा होने से चारा दाना ढुड़ने के लिए वह

इधर-उधर उड़े, घोंसले में बच्चों को एकेला छोड़ा। अकस्मात एक बहेलिया (जानवरों को खाने) की निगाह पड़ी। झट अपना जाल फेंक कर बच्चों को फंसा लिया। बच्चे बेबस थे। इतने में कबूतर कवूतरी लौटे। कबूतर छटपटाये बच्चों को जाल में फंसा देखा चोंच मिलाई फिर उसी जाल में बच्चों के अति मोह ने फंसा दिया। बेचारा अभागा अकेला आसुंओं में डूब गया। शोक सहन न कर सका तुरन्त वह भी तीनों के फेर में जाल में फंस गया। बहेलिया ने अपना काम पूरा पाया दबोच कर उड़ गया।

मनुष्य की जागृत अवस्था जब अति में असिक्त हो जाती है, तो वह सब कुछ भूल जाता, यहां तक कि प्रेमी प्रियसी की अवस्था की तरह वह मान शान भूलकर उसी कर्म में अंधा हो जाता है चाहे सब देखकर आंखें बन्द कर लेते हैं। मनुष्य का यह प्रभु का गौण जगत उससे अलग एक घोंसला है। प्रभु ने मनुष्य को यह श्रेष्ठ मानव योनि शुद्ध देह दी है, आत्मा इसका निवासी है। कर्म इन्द्रियां ज्ञान इन्द्रियां उसकी पानी की नदी की लहरें हैं। चित्त संस्कारों का स्थल है (जहां कर्मों के पुर्न वर्तमान बीज बोये हैं) मन उसकी सोच रचनाओं इन्द्रियों के दमन का रक्षक है, जिह्वा-उसका का स्थल है, बुद्धि अच्छी बुरी शक्तियों की पर्ख है, किन्तु अहंकार जो आत्मा के समीप चित्त की तरह सत, रज तम (Proton, Electron, Neutron) का बना हुआ है। यह अहंकार ही चित्त को उकसाकर स्मृति द्वारा वह कर्म कराता है। जो अति की ओर ले जाकर नाश वृत्तियों को उत्पन्न कराता है। आत्मा दुःख भोगती है।

अस्तु जगत में यदि बहती हुई कर्मों की नदी की लहरों को पार करना है तो गीतानुसार यदि हर गृहस्थी सब कर्म अपनी मर्यादा में रहकर करता है उनके असिक्त नहीं होता, फंसता नहीं, चाहे भोग विलास हो उसका जीवन स्वर्ग तुल्य है। अर्थात मानव काहे तू धर्म-परिवर्तन, आन्तकवाद, हिंसा, जीव हत्या, लूटमार सम्पति को नष्ट करता है। अथवा वासना की पूर्ति के लिए नारी के रूप में असिक्त रहता है। उसका शोषण करता है, या धन प्रकृति की यह दशा बनाता है, तेरा ऊपर उठना असम्भव है जरा सुधर।

तेरे को शास्त्रों में अरूड़ प्राणी का कहेंगे किंतु श्रेष्ट योनि पाकर मोक्ष के द्वार की अनुभूतियां धर्म, अर्थ काम मोक्ष को खुला पाकर पुरुषार्थ की शक्ति से अर्थात क्यों नहीं पुरुषार्थ ऐश्वर्य की युक्ति को अपनाता। संध्या करो, अन्तःकरण शुद्ध करो फिर उंचा उठो सीमा में रहो शुद्धता से प्रेम को पाओ। धन कमाओ वृद्धि करो पर न्याय मेहनत से मनुस्मृति ही मन, आत्मा ज्ञान की साधना इन मन्त्रों से स्पष्ट करती है। कि पवित्रता की शक्ति में बल है।

अद्भिर्गात्राणि शुध्यान्ति मनः सत्येन शुध्यति
विद्यातपोभ्यां भूतात्मां बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति

अर्थात शान्ति की प्राप्ति है शुद्धता तथा अति के दुष्ट मार्ग को त्याग कर अति के क्लेशों से बचना,

❁❁

संसार में दुःख है, दुःख है, दुःख का कारण मोह लोभ है। **(महात्मा बुद्ध)**

संध्या करने की उपयोगिता

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है मृत्युः का भोगना। इसके दुःख को भोगने से बचने के लिए, विजय पाने के लिए तथा सच्ची शान्ति-तन-मन, आत्मा चित्त स्थिर रखने के लिए महर्षि दयानन्द जी ने सन्ध्या को दिनचर्या का माध्यम बनाने का उपदेश वेद भाष्य भूमिका तथा सत्यार्थ प्रकाश में उल्लेख किया है।

जानते हो संध्या का अर्थ क्या है?—अपने आप में अच्छी प्रकार से एकाग्रता ग्रहण करके प्रभु के चरणों में मन लगाना फिर मन को संकल्प वाला बनाना अन्तःकरण की शुद्धि करना, क्योंकि अन्तकरणः ही हमारे पूर्व वर्तमान किये हुए या वर्तमान कर्म करने का स्थल है। प्रभु ने कर्मों को करने की स्वतन्त्रता तो अवश्य दी है किन्तु पुर्न, वर्तमान किये हुए कर्मो को भोगने की मुक्ति फलों के भोगे बिना मानव छूट नहीं सकता। यह किये हुए कार्मो के बीज ही माँ के गर्भ में नर नारी के सहयोग (मैथनी शक्ति) से जब डाले जाते हैं तो उन कर्मों को भोगने के लिए मनुष्य सदा परतन्त्र रहता है। यह ही कर्मों का ईश्वरीय, सृष्टि का विधान रचा हुआ है। जो सदा घड़ी की सूई की तरह सत्य सदा बीतता रहेगा। कोई रोक नहीं सकता।

मन ही संकल्प विकल्प का कारण है और इसको शिवसंकल्प के भाव निम्न लिखित मन्त्र सिद्ध करते हैं।

ओइम, यज्जाग्रतो दुरमदैति, दैवं तदु सुप्तस्य तथैति
दुरङ्गःमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पअस्तु।

हे दिव्यस्वरूप मन तू शिव संकल्प वाला बन। इन्दियां, ज्योतियां हैं। मन उनकी केन्द्र ज्योति है। हम इस संकल्प विकल्प मन को वश में करे। किसी को अत्याचार हिंसक कर्मो से हानि करने की इच्छायुक्त कभी न होने दे। सदैव मन की धारणा को कल्याण तथा प्राणी मात्र के उपकार करने का केन्द्र बनाये। यह ही आवश्यकता प्रतीज्ञा सारे विश्व के प्राणी मात्र को लेकर श्रेष्ट कर्मो द्वारा विश्व में शान्ति लाने की शक्ति उत्पन्न करनी चाहिए। तभी हम आतंकवाद अधर्म से मुक्त हो सकते हैं। तथा मृत्युः के दुःख पर विजय करके अज्ञानता, अंधविश्वास कर्मो से बचने का उपाय सोच सकते हैं। पाठको इसके लिए अन्तःकरण को शुद्ध बनाओ,

जिसका साधन महर्षि दयानन्द जी ने संध्या करने को दिनचर्या का माध्यम बनाने पर बल दिया है।

अन्तःकरण की शुद्धता ही पापों से बचाने का एक मार्ग है। संध्या से ही शुद्धता ग्रहण करके, आत्मा का लक्ष्य उस असीम शक्ति (प्रभु) से सम्बन्ध जोड़ने से धर्म के लिए बल प्राप्त होता है, और प्रभु जो निर्गुण, सगुण रूप में आत्मा के साथ हमारी देह में स्थित है प्राप्ति सम्भव हो सकती।

प्रभु का सत्य स्वरूप है और आर्यसमाज का सत्य सन्देश यह ही है कि पहले प्रभु की शुद्धता तथा सत्य स्वरूप को जानें, वेदों का पठन करें, अनुकरण करें और स्वामी जी की धारणा (नियम) अनुसार ईश्वर के सत्य स्वरूप को सुनाएं, फिर प्रभु की अर्चना करें, यह सन्देश ही विश्व में सत्य लाकर शान्ति ला सकता है।

अन्तःकरण की शुद्धता के भावों की समीक्षा मनुस्मृति के पांचवे अध्याय के 109 श्लोक में की है। यह मन्त्र शरीर की शुद्धि से अधिक अन्तःकरण की शुद्धता पर प्रकाश डालता है। जल तो शरीर के ऊपरी भाग की मैल सफाई करता है, पर मन की शुद्धता सत्य बोलने मानने करने से पवित्रता लाती है, आत्मा की शुद्धता जीवात्मा तपश्चरण द्वारा निर्मल बनें चित्त में स्वरूप स्थिति को प्राप्त करता है। विद्या, योगाभ्यास, धर्म आचरण से पवित्र होती है। बुद्धि की वृद्धि विकास, आत्म विश्वास ज्ञान से शुद्ध होती है जल से नहीं। धर्म नाम धारणा या उन नियमों का हैं जिसके आचार पर संसार चल रहा है। आचरण, अच्छे व्यवहार अहिंसा प्रीति मेल बिना कभी किसी से झगड़ा न करना एकता के बल से अधर्म का नाश करना- जैसे योगी कृष्ण ने ही विश्व शान्ति का पथ शान्ति, मेल, प्रभुभक्ति है। अतः मन्त्र है।

"अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेने शुध्यति॥
यह है सत्य भाव।
सत्यं जयते

टंकारा भवन की महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि

मनुष्य को इस भवसागर क्षण भंङ्गर को पार करने के लिए तीन मार्ग पर चल कर-जीवन की यात्रा पूरी होनी कहा गया है। तीन मार्ग हैं—कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्ति योग इनको अपनाकर भारत की त्रेता युग की पुण्य आत्मा मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने सच्ची शान्ति पाई। योगी कृष्ण ने गीता के कर्म काण्ड आत्मा का प्रकाश धनुर्धारी अर्जुन को देकर भक्ति मार्ग से ज्ञान पाकर विजय प्राप्त करके धर्म की शक्ति से अधर्म का नाश किया और इन्हीं मार्गों से महर्षि दयानन्द सरस्वती, योगी ब्रह्मचर्य वली वेदों के सत्य निराकार निर्गुण सत्य विद्याओं को विश्व में फैलाने के लौह पुरुष ज्ञानी, सन्यासी बने।

आज महर्षि दयानन्द जी के वर्षों का पुरुषार्थ सारे विश्व की ईश्वरीय सत्यता निष्पाप निष्फल कर्मों का उपहार बनने से लोग आर्य समाज के दसों नियमों पर चलने का प्रयास और प्रयत्न कर रहे हैं।

आज नौ द्वीपों के काफी भागों में समाजें स्थापित होने के प्रयास स्वरूप वेद मन्त्र का गान समय-समय पर उच्चारण होता है। क्योंकि संस्कृत हिन्दी भाषा की सीमा अन्तर्राष्ट्रीय स्थल तक न पहुँची फिर आर्यसमाजों के अनुयाई, रोमन अंग्रेजी भाषा को मार्ग बनाकर हवन यज्ञ, सन्ध्या का कर्म रोमन अक्षरों को अपना रहे हैं।

हमें हर्ष है, वेदों की सत्य विद्या ऋग्वेद का ज्ञान विज्ञान के प्रकाश ने ऋग्वेद को उच्च विद्याओं का ग्रन्थ विश्व के उच्च संग से ज्ञान का कोष मानकर स्वीकार किया है। जहाँ भारत के अपने देश का प्रश्न है महर्षि दयानन्द के कार्यों की बहुत उच्च भावों से देशवासियों में श्रद्धा फैल चुकी है। उनके स्वतन्त्रता के संग्राम में रानी झांसी तांतिया तोपे दो वीर थे। जिन्होंने स्वामी जी से कई बार विचार विमर्श द्वारा नीतियां निर्धारित की-यह थी गऊ की चर्बी का प्रयोग बन्दूकों के कारतूस-तथा योगियों का उत्तर से लेकर दक्षिण तक सहयोग मिला।

उन्होंने अंधविश्वास मूर्ति पूजा, पौराणिक कथाओं का जो प्रभाव हर गृहस्थी के नर नारी पर पतन ला रहा था उनका प्रतिरोध शान्ति से किया। कई घटनाओं का वीरता ब्रह्मचर्य बल के दमन धर्म से जो किया वह पवित्र करने तथा सत्य के

साधनों का धैर्य रूप दिखाया। वह एक सुधार लाने की प्रतीज्ञा दैविक शक्तियों का स्वरूप था।

एक बार पाखंडी मूर्ति पूजक के अनुयाईयों ने जब स्वामी जी का निरन्तर निराकार प्रभु की प्रचार के उपदेश सुने कई बार भटके लाठी से विरोध जतलाया पर उस महान आत्मा ने विनम्रता से सबको परास्थ किया। हिंसक आदमी नें जब लाठी दिखाई, ब्रह्मवली ने टुकड़े करके जब दो हाथों से उसे भयभीत करके आर्य विचारों का सारथी बनाया।

कहते हैं कुछ लोग दुराचार रूप से अति भावों से अपनी शक्ति प्रयोग करके दूसरों को नीचा दिखाना चाहते हैं। इस संदर्भ में एक वैश्य को धन का लोभ देकर महर्षि जी को दूषित करने की चाल चली, पर जब वह वैश्य सामने आई सुन्दरता का प्रत्यक्ष रूप् दिखाने पर महर्षि जी ने कहा विनम्रता से माता कहा तो वह लज्जा से मर गई। पड़ गई स्वामी जी के चरणों में मांगी क्षमा बताया सारा रहस्य।

प्रीति भोज अतिथि संस्कार धर्म हिन्दुओं, आर्य की रक्षा के साधनों का एक नया बोध दिखाया। शास्त्रार्थ में वह दलीले वेदों से प्रमाणित की कि बड़े विद्वान ईसाई धर्म के पादरी उनके अपने बन गये। जात पात छुआछूत नारी की बराबर भागेदारी शिक्षा हो, समाज हो विकास सम्बन्ध हो धर्म परिवर्तन की रक्षा का शुद्धि संस्कार हो, वह तो आधुनिक युग के योगी कृष्ण, गीता के सच्चे उपदेशकों की तरह महात्मा थे।

राष्ट्र हित उनके रक्त में सींचा गया था। लार्ड मकाले के अंग्रेजी भाषा का जो चिन्ता रूप गवर्नर को विरोध दिखाया यह उन्हीं के बीज बोये हैं जिनके फलस्वरूप हिन्दी भाषा के भाव राष्ट्रीय केन्द्रीय भाषा की जागृति हो रही है। तथा साहित्य में मदन मालवीय के कार्य, संस्कृत भाषा की विद्यापीठ की प्रगति तीव्र दिशा ले रही है।

महर्षि की दैविक शक्ति ने भारत की खोई हुई गुरूकुल व्यवस्था का चित्रण हम श्रदानन्द जी को स्मरण करते हैं। जिन्होंने गुरूकुल स्थापित करके भारतीय संस्कारों को नया मोढ़ दिया। हाल में सुदर्शन जी गुरूकुल के अधिष्टाता ने जर्मनी के विदेशी दूतों से आपसी मेल विर्मश की जो गति उत्पन्न की है, वह सब देश के अतिथि संस्कारों का योगदान सदा महर्षि दयानन्द जी की दूर्दशक अनूभूतियों की स्मरण उन्हें सदा श्रदांजलि देने की यादें तरोताजा करती हैं।

परन्तु विद्वान वेद मन्त्रों के उल्लेख से शायद इतना प्रकाश नहीं डाल सकेंगे, जितना यह वृद्ध महर्षि के हर कार्य के बलिदान की आहुति समझ कर बारमबार नम्न करता रहेगा, क्योंकि ज्ञानीयों, विद्वानों ने जो उत्तम कर्मों के वेद ज्ञान के ईश्वरीय अनूभूतियां धर्म, अर्थ, काम मोक्ष की अभ्यासिक रूप से सक्षम सम्पन्न बनाने की

टंकारा जैसे आत्मा शुद्धि का ज्ञान स्थल योगदान दिया है। वही सबसे पुण्य श्रदांजलि है जिस स्थल पर हर वर्ष भारतीय और विश्व के महाद्वीपों से विद्वान आकर वेद ज्ञान के पठन, उपदेश सुनाकर सुनकर आर्यों को कृतार्थ करेंगे।

अन्त में पुण्य आत्मा को श्रदांजलि देते हुए हर आर्यों को मेरा नम्र निवेदन है, एकता, अखंडता में बल है। भूलो मत-भेदों को। उठो ओ३म ध्वज को फहराने से कि सारी वायु वेद ज्ञान के उच्चारणों से सत्य को स्थापित करो। असत्य अंधकार को सूर्य के अनुशासन से प्रकाशित करो, जब लोग शुभ कर्म, शुभ वाणी, उपकार जात-पात को तोड़कर निराकार एक अनादि अनन्त, निर्गुण सगुण प्रभु की सत्य अनूभूतियों को जानकर मन को तन को शुद्ध करके सामवेद की उपासना बल से अध्यात्मिकता वाद को विश्व का सबसे प्रथम धन बनाये। आर्यो शुद्ध करो मन-तन को जो भाव ज्ञान तत्व के मनुस्मृति के पांचवे अध्याय के 109 श्लोक को जीवन उद्देश्य बनाकर महर्षि जी की सन्ध्या पथ से ईश्वर की अनुभूतियों से सम्बन्ध बनाकर शुद्धता से मृत्युः और भगवान को याद करना मत भूलो। पर टंकारा में आर्य की सत्ता, दयानन्द की शक्ति की यादों को सदा आत्मा में स्मरण करो। वही आर्य संगठित फूलों की सुगन्ध वाटिका है। मनुस्मृति के मन्त्र

''अद्भिर्गात्राणि, शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा शुध्यति बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति
हमारा धर्म वेद ईश्वरीय ज्ञान, यादे टंकारा
शरीर का अस्तित्व परमात्मा भक्ति सात्विक गुण शुद्धता टंकारा

❁❁

महावीर :- जैन धर्म
आत्मा ही अप्रमत तथा प्रमत है
(अहिंसा, हिंसा) जीव हत्या पाप है।

क्रोध की दुष्ट जनक अवस्थाएं

प्रभु की व्यवस्था सार्थक नियमों से सम्पन्न है। मनुष्य योनि कर्मों के फलों का शुभ जन्म है। शरीर वर्तमान पूर्व जन्मों के कर्मों को सुधार कर अपने प्राण आत्मा के रूप शरीर में सूक्ष्मतिसूक्ष्म तत्व से मनुष्य को यह श्रेष्ठ अध्यात्मिक योनि का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह आध्यात्मिक गुण प्रथम कोटि का धन है (सामवेद) इसके पालन से मनुष्य तीनों धनों शारीरीक, मानसिक अध्यात्मिकता का उत्तम सत्ता, ज्ञान, प्राप्त करने योग्य पुरुष कहाता है। आध्यात्मिक सत्ता ही दैविक सात्विक गुणों की अपेक्षा पाकर आत्मा की कमी पूर्ण आनन्द प्राप्त कर के इस चेतन आत्म तत्व द्वारा भोग कर प्रभु से सम्बन्ध, उपासना संध्या देवयज्ञ के माध्यम से सामवेद के उपासना ज्ञान के अध्ययन से आत्मा का उद्देश्य प्रभु प्राप्ति की सफलता की सोपान का धर्म बल ग्रहण करता है। यही जीवन की वास्तविकता उपलब्ध करना ही सुःख को भोगने की साधना है।

महर्षि दयानन्द, ब्रह्म ज्ञानी जैसे अमर आत्मा के वेदों के विषयक शास्त्रों का स्वाध्याय तप किया फिर उस शिक्षा का उपदेश सुनाकर लिखकर वेद मानव सत्यार्थ प्रकाश के शब्दों द्वारा सत्य को ग्रहण करने, असस्त्य को त्यागने तथा मनुष्य को अपनी उन्नति में ही न सन्तुष्ट रहना चाहिए पर दूसरों की उन्नति का भी ध्यान करना चाहिए तथा ईश्वर के निर्गुण, सगुण की शिक्षा को ग्रहण करना, अर्चना करना ही वेद सब सत्य विद्याओं के भण्डार का अपनी आत्मा को पवित्र स्वरूप देने के लिए स्वाध्याय करना आर्यों का परम धर्म है। महर्षि जी के दस पवित्र नियमों का पालन करना आर्यों की आत्मा और पवित्र भावना प्राप्त करना ही सच्चे आर्य कहाने का ज्ञान बल श्रेष्ठता की दिशा में प्रगति है। यह ही सत्य है। सोचो जरा क्यों?

अपितु वेदों की सत्य विद्या स्वीकार करो फिर प्रभु भक्ति द्वारा जीवन की पुण्य यात्रा प्रति दिन संध्या पांचों यज्ञों की धारणा उत्पन्न करो और जीवन को प्रभु के सत्य स्वरूप में मग्न हो। आत्मज्ञान योग शक्तियों के साधनों से सोते जागते इसके सात्विक गुण को जीवन का मनोरथ बनाकर इसको सब कुछ समर्पित करके महर्षि दयानन्द की तरह उपकार करके, कहो प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो।

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है मृत्युः जिसने मृत्युः के कारण जानकर अनर्थ क्रमों की जिज्ञासा त्याग दी। मन को प्रभु भक्ति में लीन करके रसनेन्द्रियों को वश

में कर लिया समझ लो उसने धर्म में बल प्राप्त करके जितेन्द्रियां प्राप्त कर ली और वही सच्चा आर्य प्रभु भक्त, सत्य स्वरूप प्रभु के दर्शनों का उत्तम देवता सूक्ष्म सुख आनन्द का आध्यात्मिक प्राणी है। प्रभु के स्नेह पाकर वह जितेन्द्रिय पुरुष सिद्ध हो गया और प्रभु के स्मरण से मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली। आज महर्षि जी को लौह आध्यात्मिक वेदों के प्रवक्ता स्वीकार विश्व के नौ द्वीपों के लोग करके आर्य समाजों को दूर-दूर फैलाने की चेष्ट करते हैं। संस्कृत न जानने पर मन्त्र संध्या में रोमन भाषा का प्रयोग करते हैं। धन्य हो मेरे भारत के मनु योगी।

ज्ञान-प्रेरणा तथा आत्मा को शुद्ध करने की साधना है। यद्यपि आत्मा का भय क्रोध, लोभ, मोह, स्पृहा (कामना) आत्मा से कोई सम्बन्ध नहीं। किन्तु देह इन्दियां प्राण और मन में स्थित आत्मा जब उनका अभिमान कर बैठती है, आत्मा स्वरूप मान लेती है। उसका नाम जीव हो जाता है।

जगत प्रभु का गौण, नाशवान विलास रूप के कारण तीन तत्व, गुण, सत, रज तभ हैं! प्रकृति से उत्पन्न होते है। बुद्धि भी उसका प्रभाव देती है। यह तीनों ही में से अधिक नाश की ओर ले जाने वाले राजसिक मनुष्य को लोभ मोह, माया के अजगर के मुहँ में डाल देते हैं। फिर चिन्ता (अनुसन्धान) के तत्व दुःख भोगने में साँप की तरह जहर का प्रभाव डालकर मृत्युः का काल दिखाते हैं। पर सात्विक गुण देवता तामसी पशुहीन संस्कारों के ओत प्रोत में घूमाते हैं। कंस रावण, दुर्योधन हिटलर हिंसक इस्लाम यह सब तमा युक्त हैं। आर्यो याद करो महर्षि दयानन्द, मर्यादा पुरुषोतम राम, योगी कृष्ण के सात्विक अनुभूतियों ज्ञान द्वारा ग्रहण हुई सत्ता जिन्होंने इसी अनुभूतियों से संसार को शान्ति वेद ईश्वरीय ज्ञान तथा वेद तत्व गीता के उपदेश संसार को सुनाकर लिखकर कृतार्थ किया था। उनके उपकार ही ने अद्य पापों से मुक्त होने की साधना का ज्ञान दर्शाया था। क्रोध का तामसिक तत्व नाश का कारण है, शरीर भी समझें तो तामसिक है। परन्तु सात्विक प्रभु के गुण अद्वितीय हैं जो प्रभु के निर्गुण सगुण श्रद्धा यह जो सब तामसिक राजसी गुणों से विलक्षण हैं। गीता में सत्य कहा है। **"वन तु सात्विको, वासो ग्रामो उच्यते तामसं द्युतसदं"** मंत्र के निर्गुणक (पांच अध्याय) वन में सात्विक (सन्यास) निवास है, गांव में राजसी (राजाओं की तरह) और जुआघर में रहना तामसी (माया रूप)।

अस्तु महर्षि दयानन्द के सन्देश को फैलाओ। कैसे-प्रभु के सत्य स्वरूप (सात्विक) का वेदों द्वारा ज्ञान पाकर मनन करके अनुकरण करो ताकि अंध विश्वासी बनकर मूर्ति को भगवान मान कर पूजा न करो। क्रोध को त्यागो, क्षमा ही आत्मा सत्य का दृश्य दिखाता है। अंग्रेजी में पूर्व राष्ट्र पिता राधा कृष्ण जी ने गीता का सार में कहा? क्रोध निराशा सत्य का भाव है।

अध्यात्मिक पथ (मूल्याकंन)

आत्मा, परमात्मा की आखंडता का रहस्य है, विकारों की बीच की दीवार का ध्वंस करना। कर्म ही इनकी वास्तविकता को सिद्ध कर सकता है जो मनुष्य की गत विधियों का विलक्षण (अनोखा) तत्व (रूप) है।

"कर्माणि कर्मभिः कुर्बन मनमितानि देहभव।
"तत्तत् कर्म फल गृहन् भमतीह सुखेतरम ॥

मनुष्य कर्म इन्द्रियों से सकाम करता है। उनके अनुसार शुभ कर्म सुःख और अशुभ कर्मों का फल दुःख भोगता है। शरीर धारी होकर संसार में भटकने लगता है। यह संसार में ईश्वर माया रूप है।

परन्तु हर आत्मा मनुष्य संसार में किये हुए शुभा-शुभ के फलों के कारण भोग योनि की श्रेष्ठ योनि कही गई है। अपितु उसके मन की भावना भटकने का स्रोत है। यह संसार कल्पित वृक्ष स्थल के दो बीज पाप, पुण्य, असंख्य जड़ों से उत्पत्ति प्रलय की ईश्वर माया का नाशक तथा बनने और परिवर्तनों का घर है। यहाँ जो आता, पैदा होता जाता यह ही ईश्वर विधान सृष्टि की माया जाल है। शरीर इन्द्रियों, हड्डियों रक्त का बना हुआ ईश्वर की सूर्य आत्मा की तरह प्रभु की देन, आत्मा निवास करती है। आत्मा के एक साथ एक निराकार (निर्गुण) सगुण (दया) असीम शक्ति, परमेश्वर दो छाती के मध्य गड्ढे में स्थित है। आत्मा मनुष्य के प्राण ईश्वर का पुत्र सखा चेतन शक्ति शरीर का स्वामी ज्ञान तत्व तथा प्राणों का सर्वस्व है। उसकी रक्षा के लिए अध्यात्मिक ज्ञान के तत्व बोधिक उन्नति, मानसिक धर्म दमन मन का संयम, सन्तोष, समता, आत्म विश्वास, सुखः दुखः को सहकर उस धर्म बल को प्राप्त करना। जिस पर समस्त संसार कार्य रूप में पवित्रता से शुद्ध आचरणों की शक्तियों से गतिशील है। आचरण जो आपसी मेल, सार्थक व्यवहारों, मेल जोल निर्पक्षता भावों की शक्ति है। उसकी सत्यता स्थिरता और समता ही है जो आज आतंकवाद, हिंसा, जीव हत्या का सब शारीरिक, मानसिक, आर्थिक सामाजिक, राजनीतिज्ञ शक्तियों से हम प्रतिरोध प्रतिशोध कर रहे हैं वही सच्चा धर्म आचरण का पालन है। पर उन शक्तियों का निर्माण तभी हो सकता है जब हम महर्षि दयानन्द योगी के योग, वेद

विधाओं के निचोड़ सूत्र के मन्त्र ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम'' का स्थिरता तथा उग्रता से चिन्तन करें। खाली पुस्तकों, या वाणी से कहना जयघोष लगाने से भारत प्राचीन वेद ईश्वरीय ज्ञान की विद्युता अथवा शान्ति का वही राम राज्य भारतवर्ष की अखंडता को स्थापित नहीं कर सकते। उसकी सत्यता का समीकरण तभी अभ्यासिक रूप में प्रतीत हो सकेगा। जब प्राचीन वेद संस्कृति की जड़ें जो गुलामी तथा उपनिवेषवाद मुस्लिम अधर्मी बाबर मुगलों ने खोखली करके यह सब कुछ अस्त कर दिया है। न शान्ति धन, न खेती की जीने के लिए उतनी उपज। घरों की कमी, और सामाजिक ढ़ांचा इतना बिगाड़ दिया है, कि स्वतन्त्रता प्राप्त होने के कुछ वर्षों हम अपने अस्तित्व, तथा राष्ट्र के हित के लिए कभी यह नहीं कह सके कि हम भारतीय हैं, एकता के भक्त हैं, तथा भिन्नता होने पर हम यहां पर बसने वाले कभी आचरणों व्यवहारों को तनावों, कष्टों, भूखमरी दरिद्रता, बेकारी को बढ़ने नहीं देंगे। सदा इन समस्याओं को हर धर्म की पुस्तक में कुछ भी अलग लिखा हो, उस पर चर्चा नहीं करेंगे, न विवाद का विषय बनायेंगे।

भारत देश, परिस्थियों और बाहरी हिंसक बारदातों के हस्तक्षेप से बिखर गया है और बिखरता रहेगा। चाहे इस्लाम धर्म के अनुयाई हो, ईसा को मानते हो, गुरुनानक, महाबुद्ध के बुद्ध धर्म अथवा जैनियों के महावीर को अधिष्ठ मानते हों, हमारा धर्म है इसे निर्पेक्ष भावों से बचाना। वह मार्ग है मनुर्भव, मनुष्य को मनुष्य समझो। परमात्मा सभी जीवों के समान आत्मा, तथा अपनी योनि में अपनी योनि के जन्म के अनुसार सुःख दुःख, भोगना विधाता के कर्मों के फलों को भोगना अटल है। फिर काहे, हिन्दू को कभी मुसलमान या ईसाई या अन्य धर्मों में परिवर्तन करने के लिए, हिंसा, अस्तेय (चोरी) धोखे, जबरन, शोषण कर रहे हो। हिंसा त्यागना ही मनुष्यता है।

भारत के उन लोगों पर मेरा संकेत है जिन्हें यह सीधे साधे भारतीयों ने अतिथि यज्ञ में स्थान दिया। घर दिया खाने को सर्व कुछ अवश्यक वस्तुओं के भोग के लिए खुली छुट दी। धन्धों में घूसने के लिए विशाल हृदय दिया। पर तुम्हारे बाहरी संस्कारों की रट ही भिन्नता ला रही है। तुम भारत को अपना राष्ट्र नहीं मानते।

सोचो, जिस देश में रहते हो जिसकी मिट्टी में फ़लते फूलते हो, उसे आतंकवाद, हिंसक धर्म के स्वार्थ से शोषण करके, अपनी माता, जन्म देवी जो तुम्हारी मां, बहन बेटी बेटा, भाभी नन्द अथवा निकट खून है उसको अपवित्रता के भावों से लज्जा जनक कर्म करके अपनी पुशहीनता को सिद्ध कर रहे हो। हे देश के द्रोही त्यागो अज्ञानता के अंधकार को अपने मन में अल्लाह, भगवान का भय करो।, सत्य पर यदि सब कुछ धर्म, अपने हिंसक कर्मों को छोड़कर चलोगे, तो यह भारत का

दुःख गरीबी, बेकारी, भूख, आत्महत्या, नारी का शोषण, छोटी आयु की लड़की से वासना की पूर्ति के लिए विवाह आदि छल, कपट, अधर्मीयों के स्वाभाव में परिवर्तन लाओ, तथा परमात्मा का सत्य स्वरूप-निराकार रूप आत्म ज्ञान को जानो और फिर अर्चना करो। देश तुम्हारा है, इसे समृद्धशील धनवान बनाना एकता का मार्ग है। सत्यं जयते। यह आर्य सन्देश है।

अस्तु भारतीयो आखंडता के दो बीज सत्यता, पुरुषार्थ तथा धर्म अर्थ, काम मोक्ष को अपनी भक्ति, हित से मनुष्यता समझो। शुद्धता पवित्रता प्रगति आचरणों धर्म का बल जो मनुस्मृती के पाचंवे अध्याय का सत्य ज्ञान रस है अनुकरण करो तभी भारत जागेगा उन्नत पर पहुँचेगा। अर्थात्

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोयां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानिन शुध्यति ॥

मन पवित्र करो ज्ञान की वुद्धि करके शुद्ध आत्म से भिन्नता मिटाओ ज्ञान मात्र को पहचानो।

❁❁

कबीरः चंचल मन का कोई स्थिर नहीं माया भंयकर डायन है।

भारत की सुरक्षाः आध्यात्मिक शक्तियों का निर्माण

आज खेद होता है, जब हम भारत का प्रत्येक नागरिक यहां की छिद्रित (छेड़ा हुआ दूषित) अवस्थाओं का पतित रूप देखकर हमारे मनों में दुःख असुरक्षा के बादल घूम रहे हैं। हम कभी सोचते हैं कि यहां की प्राचीन वेदों के ईश्वरीय ज्ञान का सत्य स्वरूप का देश, सदा कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्ति योग के लोग विश्वासी पवित्र पात्र थे। यह मनु की भावी सन्तान काल में भारतवर्ष भरत राजर्षि के नाम प्रसिद्ध माना गया था तथा ऋषियों, मुनियों योगियों का पुण्य तीर्थ शान्ति प्रधान करने का प्रधान देश सारा संसार स्वीकार करके यहां पठन के लिए टैक्सला विद्यापीठ में आना जाना करते थे। यह अतिथि भावों के संस्कारों के आनन्द प्राप्त करने की ज्ञान वाटिका मानी गयी थी।

यह राम राज्य के आध्यात्मिक आस्थाओं अपेक्षाओं का धर्म स्थल और स्वर्ग पाने का शान्ति, प्रदेश माना गया था। जहाँ कभी ताले चाबी का नाम कोई नहीं जानता था न अस्तेय न वर्तमान कलियुग की तरह लूट, रिश्वतखोरी; पराये धन पर अधिकार जमाने का देश सुना जाता था। पर काल समय के परिवर्तन ने आशाओं शान्ति पसन्द देश को निराशाओं का नर्क, हीन बना दिया जो रूकने का नाम नहीं दिखता।

पर जो उत्पत्ति प्रलय, ईश्वरीय सृष्टि का अटल विधान है—आना, जाना, उपजना नष्ट होना, जन्म, मरण, सुःख दुःख, हर्ष, शोक, प्रकाश, अधंकार, ऊपर उठना, नीचे गिरना है। शुभ अशुभ कर्मों का फल आनन्द, प्रभु प्राप्ति, तथा अशुभ कर्मों का फल, संसारिक बन्धन, बुराईयों, कष्टों का स्वयं पूर्व, वर्तमान कर्मों के किये हुए के फल मकड़ी जाल की तरह फंसना। जिसका तात्पर्य है कि दुष्ट कर्म करने वाला कभी मुक्त नहीं हो सकता। वह बार-बार जन्म मरण के चक्र में घूमता रहता है। फिर काल परिवर्तन होने से शुभ कर्मों के फल पुनः जन्म लेकर महान बनकर यश कीर्ति से प्रभु भक्ति से उसका पाना मोक्ष ही कर्मों के फलों का सत्य स्वरूप, दैविक शक्तियों का उपकार है। जिससे परमात्मा आत्मा के बीच का आवरण (पर्दा) हटाने का कथन है कि मनुष्य आत्मा ने योग शक्तियों से शुद्धता प्राप्त करके शिव भगवान की तरह आत्मा के आनन्द की सिद्धि प्राप्त कर ली है। यहां तक जिसने संसारिक माया जाल के साथ आसक्त नहीं होना जाना। वह ज्ञान प्राप्त करके सदैव परमात्मा के जाल के साथ उसका नहीं होना जाना वह ज्ञान प्राप्त करके सदैव परमात्मा के सत्य स्वरूप का पालन किया कर्त्ता

होकर फिर अमर आत्मा ध्रुव तारे की तरह संसार के अंधकार में भटकने वालों को सत्य की राह पर चलाने का सारथी महात्मा पद पाने का सच्चा योगी है। इसके विरुद्ध जो मार्ग अपनाते हैं। चाहे देवता इन्द्र हो अथवा बुद्धिमान हो वह मोक्ष द्वार की जगह नरक द्वार में फंसे रहते हैं। वह निराशा के आफत के घरों में उजड़े, भटके, हीन कर्मो से कर्म मुक्त नहीं हो सकते।

यह ही कारण है कि भारत में अहंकारी प्राणी दुर्योधन हो कंस हो, रावण हो, यह संसार के प्राणी, हिटलर, मैसोलेनी या यूनान देश का सिकन्दर हो उनका अन्त दुःख दायक तथा कांटों का मृत स्वरूप दिखा है।

उपरोक्त प्राचीन इतिहास ने भारत को अनर्थ परिस्थितियों में निवृत कर दिया है (घेर दिया है) अतएव हर भारतीय की आत्मा कमजोर अवस्था का रूप बनकर निराशा का जीवन व्यतीत कर रही है।

वास्तिवकता यह है, हम काल और परिवर्तन, ईश्वर विधान मानते रहते हैं। इस मानव को दुषित बनाते रहते हैं, और भिन्नता का रूप दिखाकर असली कमजोरी और हानि का कारण न जानना चाहते हैं। न समाज राष्ट्र के बल को शक्तिशाली बनाने का सत्य स्वरूप को खोजने का प्रयत्न करते रहते हैं। खाली लकीर के फकीर बनकर यह ही विचरण करते रहते हैं कि हमारा भारत सबसे प्राचीन संस्कृति व ईश्वरीय ज्ञान का घर था। पर न पाश्चात्य सभ्यता की तरह खोजकर अपनी शक्तियों की पवित्रता आध्यात्मिक, वैज्ञानिक भण्डारों का सत्य स्वरूप पर अभ्यासिक अनुभव के विस्तार का प्रचार करके संसार को दिखाते हैं।

इस संदर्भ में मुझे एक अंग्रेज की बात याद आई, जिसने किसी भारतीय से पूछा वह लक्ष्मण रेखा का तात्पर्य क्या था। भारतीय चुप रहा, उसने तो अपने इतिहास की कभी खोज करने की चेष्टा नहीं की। कहने का अभिप्राय यह कि औसतन हम लोग अपने इतिहास को नहीं पढ़ते केवल दूसरों का उदाहरण देते रहते हैं कि फलां बड़ा सिकन्दर था। उसी अंग्रेज ने खोज की फिर बताया वह एक प्रकार की परमाणु रेखा थी।

हम गलत हैं, केवल यह कह देने से हमारे अधिष्टा विद्वान वेदों के प्रवक्ता थे। पर खेद है कि हमारे आर्य समाजियों के घरों में कुछ को छोड़कर न संध्या पुस्तक, न वेद ग्रन्थ, न सत्यार्थ प्रकाश न धार्मिक ग्रन्थ होने की सम्भावना है। ओ३म परमात्मा के नाम का प्रतीक नहीं जानते। हमें पाश्चात्य सभ्यता ने उनके संस्कारों का गुलाम बनाकर इतने वर्षों तक शोषण करके सब कुछ नष्ट कर दिया है।

हमारी आर्य सभ्यता का रूप बदल चुका है। नारी को लिपस्टिक पाऊडर, जीन्स, पहनने का प्रेम फैशन बन गया। शराब सिगरेट क्लबों में नाचकर मदहोश होकर तांश पत्ते खेलकर तुरप चाल चलकर जुहा जीतना एक आधुनिक रीति समाज की शान फैशन बन गया है। वेदों का पढ़ना, तो एक बात, है जो (Good Morning) ने नमस्ते का स्थान ले लिया। हिंसा, चरित्र पतन, मां बेटी, बहन, भाभी को बुरी दृष्टि से देखना अथवा वासना

का शिकार बनाकर वैश्यवृति का व्यापार साधन बड़े-बड़े शहरों का चलन बन गया। यह सब गुलामी तथा इस्लाम, ईसाई धर्म के संस्कारों को अपनाना, धर्म परिवर्तन का रूप, विदेशों में जीविका करना, भारत की छिद्रित अवस्था है जिस विदेशों में जीविका करना, भारत की छिद्रित अवस्था है। जिसके कारण दरिद्रता बेकारी, भूखमरी, चरित्र हीनता, तलाक (Divorce) उपज में कमी हड़तालें उद्योगों में ताला बन्दी, अमीर गरीब, जातपात, कुर्सी पाने के भेद भाव, देश का बंटवारा तथा धर्मों में भिन्नता के कारण संघर्ष ने देश का पतन कर दिया है। ईश्वर ही रक्षक है कब सुधारक आत्मा-परमात्मा मानव की रक्षा के लिए भेजेगी। आवश्कता है योगी कृष्ण या दयानन्द की या राम विवेकानन्द की। पाठको जब तक आध्यात्मिक बल को हम प्रधानता नहीं देंगे हम सदा बिखरे रहकर चिन्तित रहेंगे, यह सोचते वर्षों भटकते रहेंगे। पर निराशा को आशारूप देने के लिए प्रभु ने वेदों गीता में आध्यात्मिकता को प्रथम धन कहा है। बाकी रूपया पैसा तो नशभंङ्गर है, शरीर भी वही सत्ता है। अस्तु यदि जीवन को तीनों धनों, शारीरिक मानसिक, आध्यात्मिक शक्तियों का सौभाग्य प्राप्त करना मत भूलो। महर्षि दयानन्द के उपासना, सामवेद का तत्व ज्ञान। संध्या ही अन्तःकरण को शुद्ध करके देह की अपेक्षा (शरीर) अति महत्त्व है। यह ही साधना है। जो धर्म में वल प्राप्त करती है। फिर धर्म की पुण्यता पुरुषार्थ ऐश्वर्य की चारों अनूभूतियों, धर्म, अर्थ, काम मोक्ष के मार्गों से चलकर जीवन को प्रभु के सत्य स्वरूप, आध्यात्मिक बल का प्रथम धन उपलब्ध करने का तत्व ज्ञान है। जिसने प्रभु प्राप्ति से धनवान यशवान कीर्तिवान, संसारिक प्रसिद्धि प्राप्त करनी है तथा शारीरिक मानसिक स्वस्थ तथा इन्द्रियों को वाश में रखना जान लिया, समझलो उसने सब पर विजय पाली। सामवेद का यह मन्त्र आध्यात्मकवाद को प्रथम धन की समीक्षा तथा भारत को छिद्रित अवस्था से दूर करने का साधन है। देश भक्तो मत भूलो उपासना मार्ग, यदि जीवन यात्रा का तीर्थ पार करना है। यह महर्षि जी कह गए मंत्र है–

आनोमज परमेस्वा वाजेषु मंध्यमेषु।
शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥

1499–सामवेद

ज्ञान सर्वोत्तम धन है। वल मध्यम कोटि, रुपया, पैसा तृतिया कोटि का धन, तीनों धनों का सौभाग्य वही है, मोक्ष आनन्द प्रथम कोटि का धन आध्यात्मिक स्वाध्याय ध्यान शमदम मध्यम सदभोग निकष्ट कोटि का धन, प्रथम अध्यात्मिक द्वितीय मानसिक तृतीय शारीरिक धन है।

❁❁

गुरुशंकराचार्य :– ज्ञान विचारों से प्राप्त होता है जो बिना प्रकाश से दिखना कठिन है।

जीवन के अनमोल रतन

1. ॐ नाम ईश्वर का सबसे श्रेष्ठनाम है
2. साम का आश्रय है :–स्वर है।
3. स्वर का आश्रय है :–प्राण।
4. प्राण का आश्रय है :–अन्न।
5. अन्न का आश्रय है :–स्वर्ग लोक
6. जल का आश्रय है :–स्वर्ग लोक
7. स्वर्ग लोक का आश्रय है :–पृथ्वी लोक
8. पृथ्वी लोक का आश्रय है :–आकाश

हमारा शरीर पांच तत्वों का बना है–जल, अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश।

प्राण–मानव के जीवन का श्वास जो उसे आयु देता है, आत्मा परमात्मा का सूक्ष्म शरीर का तत्व जो स्वर द्वारा, वाणी से बोलने की गति देकर जीने का सूक्ष्म तत्व ज्ञान का साधन है।–अनेक साधन हैं (i) श्रुति (ii) प्रत्यक्ष (iii) अनुमान (iv) ऐतिहास (महापुरुषों की प्रसिद्धि।)

शरीर की इन्द्रियां–पांच ज्ञान पांच कर्म

(i) **मन**–संस्कारों का स्थल-अन्तःकरण, चित्त वृतियों का स्थल। तीन अवस्थाओं का कारण– (i) जागृत (ii) स्वप्न (iii) सुपुप्ति।

संकल्प विकल्प का कारण–भावनाओं का मंन्दिर।

शरीर क्या है–हड्डियों रक्त मांस, वीर्य, ओज का पिंज।

शरीर तीन प्रकार का है–(i) आधि भौतिक (ii) अध्यात्मिक (iii) अधिदैविक।

शूरता–वासना पर शरीर का दमना।

नर नारी के शरीर की अवश्थाएं–नौ हैं।

(i) जीवन के सही मार्ग पर आना जाना कैसे

(i) गर्भादान (ii) गर्भवृति (iii) जन्म (iv) बाल्यवस्था (v) यौवन अवस्था (जवानी) (vi) कुमार अवस्था (vii) अधेड़ अवस्था (viii) बुढ़ापा (ix) मृत्यु :–

शरीर के लोक—तीन प्रकर के जो सन्तोष, संयम समता के अभिष्ट हैं ।

(i) भूःलोक—नाभि के नीचे का स्थान, प्राणियों को जन्म देने का कर्म साधन-भोग का तत्व

(ii) अन्तरिक्ष—नाभि के ऊपर हृदय (अन्दर) आत्म दर्शन सन्तोष

(iii) घुः लोक—हृदय के ऊपर सिर नाक दो कान दो आंख मुख को जगमगाता है। ज्ञान तत्व

आत्मा :—प्राण तत्व-अमर अजर, सूक्ष्म गति देने का तत्व

सृष्टि के आधार—(i) प्रकृति (ii) जीव (iii) परमात्मा (अनादि)

प्रकृति—अनादि बिना चेतना, आनन्द रहित जीव के भोग की वनस्पतियां

(ii) जीव—अनादि, चेतना युक्त, आनन्द रहित

(iii) परमात्मा—पूर्ण, अनादि, अनन्त, अनन्द संसार की उत्पत्ति, प्रलय, काल परिवर्तन सूक्ष्म, चेतन आनन्द दाता सब जीवों, प्रकृति आदि का उत्पादक बिना अंग, कर्म गुण, स्वाभाव सत्य स्वरूप, रक्षक।

जगतः—ईश्वर का गौण जिसके तीन भेद हैं—

(i) अध्यात्मिक (ii) अद्भूत (iii) अधिकर्त्ता

जगत के तीन जीव—समान आत्मा, समान भोग, मृत्यु वह है।

(i) वह जीव जो अड्डों से उत्पन्न होते हैं—पक्षी आदि

(ii) वह जीव जो धरती से उत्पन्न होते हैं—सांप, मछली आदि।

(iii) वह जीव जो नाल (नाली) से निकलते-पुरूष, पशु-गाय भैंस, शेर आदि या पसीने से। वह जीव जो धरती जल से पैदा होते हैं।

ज्ञान क्या है—ब्रह्म का साक्षात्कार सृष्टि की परमात्मा की रचित पदार्थों का हानि लाभ, परख जानना तथा आत्मा विषय का भेद, प्रकृति क्या है, आत्मा का लक्ष्य प्रभु प्राप्ति, वेद शास्त्र विषय का अध्ययन।

मनुष्य का स्वाभाव प्रकृति—कर्म करना अच्छा बुरा।

प्रकृति के तीन गुण—जगत के कारण (i) सत (ii) रज (iii) तम (Proton Electron, Neutron)

ईश्वर प्राप्ति—(i) कर्म योग (ii) ज्ञान योग भक्ति योग (iii) तथा पुरूषार्थ ऐश्वर्य के चार अनूभूतियों से—धर्म, अर्थ, काम मोक्षः पालन।

संसार की व्यवस्था का सही निर्माण

(i) धर्म का बल प्राप्त करने के लिए ईश्वर शक्ति की प्राप्ति।

(ii) शरीर के स्वास्थ का ज्ञान की शक्ति से पुष्टी करना 'शौचादि के निपटना

(iii) प्राणों की रक्षा

(iv) पांचों, तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आकाश तथा उनके पर्यावरण प्रभाव पर सावधानी बरतना। दोषों से बचना तथा दूरदर्शिता से बचाव के नियमों का पालन करना जो गुण–सत, रज, तम जगत के कार्य के कारण है।

मनुष्य की बुराईयाँ–लोभ, मोह, क्रोध, माया प्रकृति के ईश्वरीय माया रूप की आसिक्त।

मनुष्य की सामाजिक प्रणाली

(1) वर्ण आश्रम–जात पात वह है, **कर्म न जन्म से उत्पन्न होना।**

(i) ब्रह्मण–विद्या, ज्ञान का धनी, पण्डित।

(ii) क्षत्रि–तलवार का धनी।

(iii) वैश्व–व्यापार, का भागेदारी-अर्थ संचालक।

(iv) शुद्र–सेवा भाव, उचित सफाई आदि।

2. आश्रम व्यवस्था

(i) ब्रह्मचर्य–सयम, सन्तोष दमन, विद्यानयुण उत्तम ।

(ii) गृहस्थ–उत्तम वेद पठन, उत्तम सन्तान उत्पन्न करना गृहस्थ–का दायित्व सम्पूर्ण संभालना।

(iii) वान प्रस्थ–परिवार के निपट कर ज्येष्ट पुत्र को भार संभालना-ज्ञान आदि संकल्प दमन, सन्यास-संसार के बन्धनों से विरक्त ज्ञान, समाधिस्थ, योगाभ्यास से प्रभु दर्शम तथा ज्ञान उपदेश देना, व्रत आदि पालन, देह पर पूर्ण दमन धर्म का पालन करना।

वैराग्य–बन्धनों तथा संसारिक भावनाओं से मुक्त, केवल प्रभु की साधनां करना।

धर्म–आचरण तथा संसार के व्यवहार पालन बिना झगड़े, भेद विरोध, प्रेम से व्यवहार करना जैसा चलता है।

संसार के दो-शरीर के कारण–सुःख दुःख (कार्य कारण मोक्ष शरीर दुःखों से छूटना)

पौराण क्या हैं–कलपित कथाएँ

शुद्धि संस्था की सफलता का रहस्य

भारत का नाम भारतवर्ष कब हुआ। इसका ऐतिहासिक महत्त्व है। कहते हैं मनु ऋषि के पुत्र प्रियव्रत के चले हुए वंश में राजर्षि भरत, बहुत विद्वान नारायण ईश्वर भक्त था उसकी प्रसिद्धि विख्याती ने इस देश को भारतवर्ष का नाम दिया। किन्तु विदेशी, मुस्लिम राज्यों के यात्रियों ने, अरब, फारस देश के प्रभा ने उर्दू शब्द से यह नाम हिन्दुस्तान जानने लगा तथा उपनिवेषवाद के प्रवक्ताओं ने फ्रांसिसी, अंग्रेजों पुर्तगालियों ने अंग्रेजी भाषा में इंडिया (India) इसे कहा, अस्तु यह Indian शब्द का उत्पादन पाश्चात्य संस्कार है।

यह सब समय काल के परिवर्तन से हुआ तथा बाहरी लोगों का आगमन और शासक बनकर गुलाम बनाना, भारत की आत्मा की कमजोरी अतिथि आओ भगत तथा धोखे बाज की नीतियों को न पहचानना ही समझना चाहिए।

आज भारत में इसाईयों की गणना की जाये तो काफी चिन्ताजनक बात और हिन्दुओं की अपने धर्म की व्यवस्था की कमजोरी है। फिर इस्लाम भी उसी किश्ती पर सवार हैं, जिसके स्थापक शासकों ने हिंसा अत्याचार जबरन हिन्दू स्त्रियों का शोषण करके विवाह रचकर जो सन्तान उत्पन्न की उसी रक्त ने राजपूतानी की सुन्दरता पर मोह के भूत से उनके द्वारा कई परिवारों को वश में करके उनका धर्म परिवर्तन किया। अकबर को अय्याशी बादशाह जहां हम कहते हैं, वहां यह नहीं भूलना चाहिए वह बाबर के बाद हिन्दुओं को इस्लाम धर्म में संख्या बढ़ाने वाला सबसे दुष्ट सम्राट था। उसकी चाल थी मधुर छुरी, प्रेम, राजपूतों को मीना बाजार में बुलाकर तोहफे लेना उसे फिर देना, तथा अपने खुफिया राजपूतनी दोस्तों से उस सुन्दर राजपूतनियों को ईशारा दिखाकर आन शान नष्ट करना इस तरह से इस्लाम की संख्या बढ़ने लगी।

चित्तौढ़ की रानी पदमनी की सुन्दरता और सती होने को जानकर हर हिन्दू इन दुराचारी काफरों से घृणा इसलिए करते हैं, क्योंकि उनकी कथनी में प्रेम, अत्याचार, व्यवहार, दुष्ट भावना तथा वासना की कमजोरी है। पर हमारे वीर राजपूतों ने उनके छक्के छुड़ा दिये, रानी पदमनी के सुन्दर मुखड़े के दर्शन शीशे में कराने पर

जब महमूद गजनवी की बुरी नीत का पता चला राजपूतों ने प्रतिशोध कर बलिदान दिया। पर पदमनी के मान की रक्षा करके उसे सती होने दिया। यह भारत की नारी की आन है जिसको पुण्य रक्षा करने के लिए तथा अपने धर्म में लौटाने का कार्य यदि कोई संस्था कर सकती है वह वीर योद्धाओं के नवयुवक सिपाही हैं शुद्धि आंदोलन के क्रांन्ति फौज, आर्यदल, श्रदानन्द तथा महर्षि दयानन्द, मदनमोहन मालवीय के शुद्ध स्वरूप हिन्दू आर्यवीर हैं। जितना भी वह कार्य कर रहे हैं, मेरे पास उनकी प्रशंसा करने के उपयुक्त शब्द नहीं हैं। उनका उपहार अमर आत्मा श्रदानन्द, बाल हकीकत, गोविन्द सिंह की दो जननी सन्तान की अमर ध्वनी है जो स्वयं हिन्दू सिख धर्म पर बलिदान हुए और उनके पद चिन्हों पर शुद्धि संस्था चलती रहेगी हिन्दुओं को फिर वापस अपने धर्म में लौटाकर रहेंगी। परन्तु शुद्धि आंदोलन की प्रगति तभी हो सकती है जब हर आर्य समाज का सदस्य या हिन्दू तत्व का वीर साबरकर बने। और अन्त तक शुद्धि समुदाय के साथ, तन, मन, धन से सहयोग देता रहे। जगह-जगह आर्य समाजों की तरह शुद्धि भवन का निर्माण सत्य तथा मनुर्भव के भावों को सत्य सिद्ध करके दिखाये।

कहते हैं अच्छा बनना कठिन है, बुरा तो हर बन सकता है जब उसके सामने लोभ धन का दिया जाये, चाल धोखे की जयचन्द्र की तरह चली जाये, नीति, दुष्ट अंग्रेजों से सीखी जाये इसलिए जिनके मन बदल चुके हैं। दूसरे धर्म में परिवर्तन हो चुके हैं उनको कैसे बदला जाये। समस्या कठिन है पर अखण्डता तथा मनुर्भव के भाव ही दूसरे को बदल सकते हैं। इस्लाम से, सीखो, मीठी छुरी, अंग्रेजों से सीखो स्वार्थ पूरा करना जैसे ऊँट की चाल चलकर वह भारत के शासक इतने लम्बे वर्षों तक रहे पर वैदिक धर्म आशावादी सीखाता है, वह है वेद ईश्वरीय ज्ञान के ज्ञान तत्व कि यदि किसी को जीतना है तो पहले स्वयं महर्षि दयानन्द के वेद उपासक बनो फिर ऐसे ऋषि के पद चिन्हों पर चलकर मनुर्भव की सिद्ध आत्मा की प्रेरणा पाकर औरों को भी मनुष्य बनाओ। महर्षि जी ने कैसे जात-पात, छुआ छात, समान शिक्षा, मूर्ति पूजा तथा शोषण और भारत की स्वन्त्रता शुद्धि आंदोलन का कार्य किया वह केवल मनुर्भव के भाव थे।

ऋगवेद के इन भावों को प्रत्येक आर्य को गांठ बाँध लेनी चाहिए—कि मनर्भव जनयों जन्म (1/53/6) वे वेद उत्तम सन्तान उत्तम बनने का आदेश देता है अच्छे कर्म करो, शुद्ध बनो शरीर तन इन्द्रियों मन आत्मा तथा बुद्धि से, जब यह तेज चरित्रवान के चेहरे पर अध्यात्मिक धर्म के बल का प्रकाश होगा। तो श्री परमो अहिंसा के वचनानुसार हर व्यक्ति कृष्ण की गायों की तरह पीछे भागना शुरू करेगा। कहते हैं भ्रमरे तो फूलों का रस चूसकर अपना स्वार्थ पूरा करके उड़ जाते हैं, पर

चरित्रवान को महर्षि दयानन्द, श्रदानन्द की तरह, कोई पीछा नहीं छोड़ने का साहस करेगा।

हम परिवर्तित लोगों को जब तक उनको अपने तेज से आकर्षित नहीं करेंगे, उन्हें मन से बदलना कठिन है

अस्तु आर्य वीरो पहले स्वयं मनुर्भव का पालन करो फिर स्वयं, असहाय दरिद्रता दुःख को उनको भूलाकर छुआ-छात के विपत्ति काल को भूलाकर उन्हें हिन्दू का प्यार उनकी ओर खिंच लेगा। वह महात्मा गांधी की तरह आपको बापू कहने का फखर समझोगे। मेरा कहना यह है उठो शुद्धि भावुक तुफान बापू की तरह बनकर जीतो सबका प्यार बनकर। अहिंसा से ताकि वह पास मिलकर हिन्दू बनकर शुद्धि संस्था जिन्दाबाद कहे।

शुद्धि समाचार फरवरी 2010

शुद्धि आन्दोलन के पांथ पांच अर्जुन धर्म वाण

1. हिन्दू अखडंता
2. हिन्दी भाषा
3. देश भक्ति
4. पं. मदन मोहन मानवीय श्रदानन्द महर्षि दयानन्द, चाणक्य का सन्देशः—धर्म पालन हिन्दुओं का सुःख है
5. नारी जागृति

रसनेन्द्रियों का दमन

भारत प्रगतिशील देश का अस्तित्व बिना अध्यात्मिक शक्तियां, ईश्वरीय वेद ज्ञान की अनूभूतियों के सदैव अधूरा और सूर्य अस्त की भांति अंधकारमय है। वेद के पालन युक्त महान आत्माओं ने जो भारत के लोगों को विश्व में प्रसिद्धि यश कीर्ति दी है वह सब विचारणीय तथा योग शक्तियों का पुण्य निर्माण है। महर्षि दयानन्द भी ऐसी एक आत्मा थी नम्न करते हैं उन्हें। यह वेदों का ज्ञान है कि ऋग्वेद ने यह ज्ञान दिया कि मानव की यह श्रेष्ठ योनि जब तक यजुर्वेद के कर्मों की व्यवस्था को प्रभु भक्ति उपासना के लक्ष्य सामवेद के स्वाध्याय से योग शक्तियों से प्रभु से सम्बन्ध बनाकर उसकी सत्य को जीवन में सही योग साधना से प्रेरणा नहीं प्राप्त करोगी, वह मानव की श्रेष्ट योनि का कर्म कभी सिद्ध नहीं कर सकोगे। इस साधन से कैसे मानव श्रेष्ठ बन सकता है ऋग्वेद के इस मन्त्र ने सही निष्कर्ष की दिशा दिखांई है—अर्थात्

"मनुर्भव जनयो जन्म" (10/53/6)। इस मन्त्र का भावार्थ यह है वेदों के स्वाध्याय से मनुष्य के मन मस्तिष्क और मन में यह धारणा भली-भांति स्थित हो जाती है कि यह सारा संसार एक ऐसी पूर्ण अद्वितीय शक्ति ने रचा है, जिससे बड़ा न कोई हैं न होना सम्भव है। "पुरूषानां परं किंचित काष्टा परगति।" प्रश्न यह भी उत्पन्न होगा कि हम वेद क्यों पढ़ें? वेदों के पढ़ने से चरित्र निर्माण करने का धर्म का तेज प्राप्त होता है, तथा उत्तम श्रेष्ठ पुरुष बनने से जब चारों आश्रमों के अस्तित्व की गृहस्थ आश्रम में प्रवेश होता है तो वेदों का अध्यात्मिक ज्ञान अनुभूति उत्तम सन्तान पैदा करने का मार्ग दर्शन दिखाता है। यह सब ज्ञान तत्व सत्यार्थ प्रकाश के अध्याय को पढ़कर अनुकरण करोगे तो इस सत्य के यथार्थ को कभी विमुख नहीं करोगे।

वेद का ज्ञान उपदेश है—कि जैसे कर्म करोगे उसी का फल पाओगे। यदि बबूल बोओगे तो कांटो से लहू लूहान हो जाओगे और ईख बोओगे तो गुढ़ का मधुर स्वाद चखोगे। यह है यजुर्वेद की कर्म व्यवस्था।

आधुनिक कलियुग जो बुराईयों, प्रलोभनों अर्नथ कर्मों के भावों से भरा है। वही

आत्मा प्राणी है जो सत बुद्धि से हर कर्म प्रयोग वस्तु की धारणा परख कर हानि लाभ पहचान कर कार्य द्वारा भोगता है। जो कर्म, वस्तु तमायुक्त होती है उसका प्रभाव भी वैसा होता है। यदि अप्रकृतिक साधनों को अपनी जिह्वा रसना बनाओगे तो फल भी वैसा पाओगे। कहने का तात्पर्य है यदि जीव पशु पक्षी, मछली आदि हत्या करके सेवन करेगा, वह तामसिक वस्तुएं, प्रकृति से सदैव तम, राजसिक धारणा का वियोग नाश की ओर ले जाकर, रोगों मृत्यु के भाव दिखाकर फल योनियों के चक्रों में घूमता रहेगा। यह ही फल देना सृष्टि, ईश्वरीय ज्ञान कर्मों की छिद्रित अवस्था है (दूषित) और वेद ज्ञान के उपरोक्त मंत्र है। मनुर्भव के लक्ष्य ज्ञान साधना तत्व के विरुद्ध पापों का कारण, संसार में अशान्ति, असभ्यता चरित्रहीन होने का फल है। पहचानो अपने को। मानव का जीवन थोड़ा है। कब मृत्युः मनुष्य का शत्रु यमराज मृत्यु का शोक सन्देश लेकर आ सकता है यह निर्णय कर्मों का फल तथा ईश्वर, सृष्टि का रचित विधान है। महाभारत काल में कंस ने मृत्यु से बचने के प्रयत्न किये। बहन देवकी के पुत्रों की हत्या की, किन्तु काल, ने तुरन्त यमराज के हवाले कर दिया। कंस को कर्मों का फल भोगना पड़ा।

अस्तु हे जीव यदि मनुर्भव के भावों को सत्यता से सिद्ध करना है तो मत भूल वेद ज्ञान के स्वाध्याय से प्रभु को याद करने की साधना भक्तियोग, संध्या उपासना तथा मनुष्य को सदा मनुर्भव के भावों से पहचान कर उसे अच्छे व्यवहार आचरण से धर्म कर्म से मेल बनाओ। कर्म भेदभाव, जात-पात अमीरी-गरीबी, ऊँची पदवी, होने का अभिमान मत करो। न झगड़ा करके मेल एकता अखंडता के भावों को जीवन दान दो।

इसीलिए नोवल पुरस्कार के पुण्य वचनों को जीवन का निर्णायक सार्थक बनाओ, अर्थात सेवा भाव।

''महान टैगोर ने सही कहा है'' Service to man is service to God मनुष्य की सेवा ही भगवान भक्ति है।

यह भाव तभी ही भर सकोगे जब महर्षि दयानन्द की तरह त्यागी ज्ञानी योगी बनोगे। याद करो विवेकानन्द के देश भक्त भारत की जब उनसे परिचय पूछा—उत्तर था मैं उस देश की सूक्ष्म, आत्मा हूँ, जहां जब कृष्ण की अध्यात्मिक भक्ति की मधुर बंसुरी बजकर सुर सुनाती थी, तो गऊएँ भी उसके पीछे भागना शुरू करती थीं। यह है चरित्रवान मनुर्भव के भाव। भारत का अध्यात्मिकवाद रामकृष्ण परमहंस ने सत्य ज्ञान उपदेश सुनाया था कि स्वार्थी तो भ्रमरों की तरह फलों का रस चूसकर उड़ जाते हैं क्योंकि उनकी रसना थोड़ी देर के लिए पूरी हुई थी किन्तु चरित्रवान के पीछे, महर्षि दयानन्द की तरह ब्रह्मवल को तेज शक्ति से धर्म दमन के इन्द्रियों पर परास्थ करने

वाली धारणायुक्त योगी के पीछे सारा संसार भागता है। वह भी बार-बार।

आज 133 वर्ष हो गये पर मनुर्भव के भावों से युक्त आर्य समाज चलती जा रही है, और अनादि काल तक चलती रहेगी।

अस्तु मनुर्भव बनना है तो पहले रसना पर कलाओं की अपेक्षा लाओ, क्योंकि गीता के निम्न मन्त्र के कथन हैं कि चाहे किसी ने बाकी इन्द्रियों पर काबू पा लिया हो, यद्यपि रसनेन्द्रियों पर काबू नहीं पाया वह कभी जितेन्द्रिया पुरुष नहीं बन सकता। (मनुर्भव) अच्छा अर्थात्–**(गीता आठवां अध्याय)**

तावञ्जितेन्द्रियो न स्यादविजितान्येन्द्रिया पुमान।
न जयेद रसनं यावञ्जिवं सर्व जिते रसे।"

यह है आतन्कवाद हिंसा से बुरे कर्मों को भगाने का दृश्य कि रसनेन्द्रियों को वश में करके मनुर्भव के भावों से भारत को सक्षम बनाओ। यह है ज्ञान।

शुद्धि समाचार दिल्ली–फरवरी 2010

मनुर्भव जनयो दैव्यं जन्म

आज सारा विश्व अपनी भिन्नता का शिकार बनता जा रहा है। स्वार्थता, ममता, लोभ शत्रुता, मोह, व्यक्तिगत समस्याओं का गुलाम बना हुआ है। मनुष्य स्वयं शरीर हिलाना नहीं चाहता, पर दू:सरों को अपना दास बनाकर न करने पर अत्याचार करके अपना आनन्द लेना चाहता है। अस्तु मनुष्य स्वयं अपना जीवन पशु तुल्य बनाकर दु:खों के घाट को विपत्तियों का कारण बनाता है। जब वह पशु, पक्षी खाता है, वहं मांस विष बनकर आहार का प्रभाव क्रोध, दुष्टता का प्रतीक बनाता है। आज आपको आश्चर्य होगा जब वह जानेंगे कि इस अधंविश्वास अशिक्षित, तथा अंधकार के कारण, अफ्रीका के एक स्थान पर अभी भी मनुष्य को पकड़ कर कढ़ाये में भून कर बांटकर मांस खाकर उसके चारों ओर नृत्य करते हैं, ऐसा मैंने स्वर्गीय महात्मा आनन्द स्वामी द्वारा सुना था। ऐसा क्यों घट रहा है। पहला कारण है सभ्यता के विकास की कमी, उपयुक्त पदार्थ जो खाद्य हैं उनकी अनिभिज्ञता दरिद्रता, भूखमरी, आलसी बनना शरीर न हिलाना, अंधकार में रहकर अंधविश्वासी बनकर वही करना जो वहाँ के लोगों की समाज करती है। लकीर के फकीर। भारत भी उसी रोग से ग्रसत है। इसलिए इन सबको दूर करने के लिए विकसित देश, जहाँ उपयुक्त पैदावार धनी व्यवसायों तथा जनसंख्या की कमी है। उनका कर्त्तव्य है इनके समाधान के लिए उपयुक्त पद उठायें। हालांकि यूएओ (UNO) , यूनिस्को (Unesco) काफी प्रयत्न करके प्रगति कर रही है, पर पूंजीवाद तथा सत्ता के पुजारी अपना प्रभुत्व सदा जमाना चाहते हैं। उनके पास साधन इतने हैं लोग उन साधनों का दुरुपयोग करके अपना स्वार्थ पूरा करते हैं, नशीले पदार्थ पीकर कल्बों में नृत्य नारी का व्यभिचार करके अनियमित साधनों से बच्चे पैदा होते हैं, जिनका जब माता पिता का पता नहीं चलता, वह नारी लज्जित होकर वैश्यवृत्ति या आत्म हत्या करती हैं। अस्तु धन आदि सामग्री का एकत्रित होना अशान्ति का कारण बनकर एडस आदि रोगों से नारी की जनसंख्या दिन प्रतिदिन घटती जा रही है और लोगों को नारी न मिलने से गृहस्थी बनने के लिए भटकते हैं कि हिन्दू हो, मुसलभान हो अन्य वर्ग की हो छोटी आयु हो नारी पैसा देने पर खरीदते हैं और घर बनाकर वासनाओं की पूर्ति करते हैं।

पर महर्षि दयानन्द की विद्युता तथा ब्रह्मचर्य वेद ज्ञान को इसलिए स्मरण करते हैं कि उन्होंने एक मन्त्र दिया था जो भिन्नता अमनुष्यता, अंधकार को मिटाने की पारस मणी है, वह है ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' एक आर्यों (श्रेष्ट पुरूषों) का राष्ट्र भाषा, समानता का प्रतीक, जहाँ सब प्रीति से रहे, प्रेम की गंगा वहे, जहाँ वेद ईश्वरीय ज्ञान को पढ़कर निराकार प्रभु की उपासना करके योग बल से आत्मा को शुद्ध कर्मो द्वारा उस प्रभु से जोड़ जो सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान अजर अमर अनादि न्यायकारी कर्म करने के लिए कोई बन्धन नहीं। पर बुरे कामों तथा कर्मो का फल वह प्रभु संसार का स्वामी अधीक्षक है। अस्तु मनुष्यता, बनने का पहला कर्त्तव्य बनने के वेद के इस मन्त्र पर बल दिया। वह है **''तन्तु तत्वन रजसो अनर्मा यहि ज्योतिष्मता पक्षो रक्ष धिर कृतान, अनुलवण वयत जोगवामपो मनुर्भव जनया दैव्य जन्म''**। वेद इस मन्त्र का सही समाधान है। कृश्चिन-इसाई परिर्वतन होने से न मुस्लमान परिवर्तन होने से या बौद्ध या पारसी, हिन्दू या अन्य धर्म बदलने से मनुर्भव का भाव पूरा हो सकता है। यह भिन्नता, बंटवारे एकता तोड़ने के शत्रु हैं, दलदले हैं। जिसमें फंसकर मनुष्य आतंकतावाद हिंसा, तथा दुर्व्यवहार, दुराचारी बनकर संसार में भिन्नता पैदा करके वह कार्य करता है जो प्रभु के विधान के विरूद्ध है।

किसी अवस्था में अहंकार न होने दो

(साही बाबा)

जीवन की असुरी राक्षसी वृत्तियां

मानव जीवन प्रभु की क्रीड़ा है। परन्तु उस क्रीड़ा के फल प्रभु देता है। जैसे मनुष्य वर्तमान, भविष्य, भूतकाल में बोता है, बोयेगा या बो चुका है, उन कर्मों को जीवात्मा को भुगतना अनिवार्य, तत्वज्ञान प्रभु का विधान रचा गया है। कोई भी कर्मों के बन्धनों से मुक्त नहीं हो सका। कर्म, यजुर्वेद की प्रधानता, ईश्वरीय प्रेरणा का तत्वज्ञान यह ही है कि ईश्वर माया और माया के यथार्थ कार्यों का जानना ही तत्वज्ञान है। तत्वज्ञान से अविद्या का नाश किया जाता है। तत्वज्ञान से ही आत्मा, पुरुष प्रकृति के विकार सहित तत्व जानना ही तत्वज्ञान है। प्रकृति और प्रकृति के कार्यों से जब सम्बन्ध हो जाता है, जीव कहलाया जाता है। प्रश्न अवश्य उत्पन्न होता है कि प्रकृति क्या है और उसके सत्रह कार्य-पांच प्राण, दस इन्द्रियां, कर्म, ज्ञान, दो बुद्धि, कारण शरीर मन क्या है, यह विषय ज्ञान विचारणीय हैं। प्रकृति को गीता में कार्य, करण उत्पन्न होना कहा गया है।'' अन्तःकरण विकार स्थल है।

''कार्य करण कृर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरूच्यते''
पुरुषः सुखदुःखानां मोक्तृत्वे हेतुरूच्यते''

यह ही कर्म का बन्धन है प्रकृति से तीन गुण उत्पन्न होते हैं, जो सात्विक जगत के कारण बनकर जीव कर्म करता है। कर्म उसको किन कारणों से करने पड़ते हैं। यह ही मनुष्य के किये हुए कर्म, कारणों के उत्पन्न होंने का स्थान नारी का गर्भाधान है। वहाँ से महाभूत अहंकार आदि उत्पन्न होते हैं, जिसका रहस्य है, किये कर्मों के प्रभु के बोये हुए बीजों की उपज का फल है। शुभ कर्म करोगे, शुभ फल मिलेंगे, अशुभ जीवन को बान्धकर भुगतने के लिए जिन योनियों से गुजरना पड़ेगा वही विकार सहित प्रकृति को जानना तत्व ज्ञान का सार, अंश है। ईश्वररूप ही सारा संसार है। परमात्मा का न आना न जाना है, वह तो सर्वदा विशुद्ध अंश सर्वदा सर्वत्र स्थित है, वह तो आकाश की भांति निर्लेप, समभाव पवित्र कण-कण में स्थित है। आत्मा तो समीष्ट चेतन परब्रह्म परमात्मा का शुद्ध अंश है। तीनों प्रकृति जीव परमात्मा अनादि हैं, पर जीवन अचेतनयुक्त प्रकृति को भोगता है। प्रकृति के भोग हिंसा शरीर में सेवन होने से आहार द्वारा, प्रभाव बनकर मनुष्य के अंग अस्त्रों द्वारा

बनकर बगुले की तरह छल कपटी, मुर्गे की तरह दम्भ, अहंकारी, पाखंडी, गीद्ध की तरह तृष्णा उत्पन्न करके, काम क्रोध लोभ, मोह के पीछे, निरन्तर भागने से न केवल देह को नाश का कारण बना देता है पर जो शुद्ध अंश आत्मा का आनन्द खोकर जीव अपनी चित्तवृत्तियों का दमन धर्म भी खोकर, अपनी अवस्था ऐसी चिन्ताजनक बना लेता है जैसे करोड़पति बनकर फिर चित्त वृत्तियों का दमन खोकर कंगाल कहा जाता है। यह अवस्था जीवात्मा शुद्ध प्रभु का अंश खोकर माया जाल के मकड़ी के तन्तु की तरह पापों में, हिसंक कर्मों में, वासना के शिकार में लुप्त होकर अपने प्रभु पैदा करने वाले को भूलकर उससे दूर हो जाता है। आज भारत की दुर्गति का कारण लोभ है।

अस्तु इसकी तरह अज्ञानी, स्वार्थी चालाक, बनावटी माया, असत, मिथ्या जो प्रभु के अतिरिक्त हम क्लेशों में फंसते हैं उससे निकलना जरूरी है। तभी हम बन्धन, मोह माया के जाल से मुक्त होकर अपने आत्मा के परमात्मा की प्राप्ति पाकर आनन्द भोग सकते हैं। अस्तु ऋग्वेद के ज्ञान का स्वाध्याय करो और यजुर्वेद के सच्चे कर्म अभिलाषी बनो। **"जो ज्ञान देता है।"**

सब जगरूप है भले बुरे नहीं कोय।
जैसे जाकी भावना तैसी ही फल होय।

बबूल बोये तो कांटे पाये, ईख बोये तो मधुर रस स्वाद पाये, अस्तु मनुष्य को कर्म फल यह ही लक्ष्य देता है कि हम कर्म के बुरे फल देने का मार्ग या साधन जीव जो आसुरी कर्म निरन्तर करते रहते हैं, लगे रहते हैं, उनको छोड़ने, त्यागने समाप्त करने का दृढ़ संकल्प बना लेना चाहिए। सामवेद ही एक ज्ञान उपासना मार्ग है जो इन असुरी कर्मों से मुक्त होने पर हटाने का राही है वह है योगवल से चित्तवृत्तियों का नरोध। अर्थात योगश्चित नरोध पर सामवेद का यह निम्न-मन्त्र शिक्षा और याचना का मार्ग दिखाता है, कि सच्चा तत्वज्ञानी बनना है, तो ईश्वर, माया, माया रूप को यथार्थ कार्यों का ज्ञान जानो, उसका दायित्व दिया मानव को जो भ्रमरों की तरह अपने शत्रु काम क्रोध लोभ मोह की वासना में फंसकर अपना मोक्ष द्वार जो खुला मिला है, मनुष्य योनि पाकर उस पक्षी की तरह घर में भोग विलास में लिप्त रहता है। इतना ऊपर उठने पर भी अज्ञानी बनकर नाश वृत्तियों का लोभी बना है। यही कारण है मनुष्य के विकार आत्मा परमात्मा को न पाना। सामवेद का 1864 मन्त्र 1 छन्द कुछ शिक्षा याचना की शक्ति उपासक को देता है, कि कैसे वह शुद्ध परमात्मा का पुत्र बनकर शुद्ध अंश बनकर प्रभु प्राप्ति करे।

"कङ्का सुपर्णा अनुयन्त्वेनान् गृधामन्नमसावस्तु सेना।
मैषां मोच्यघहारश्च नन्द्रे वयांस्येनाननुसयन्तु सर्वान ॥

हे ज्ञानी उपासक उत्तम कर्मों से पालन पोषण करने वाले जीव क्यों इन काम क्रोध लोभ मोह शत्रु के पीछे पड़ जाता है, इन सबको ऐश्वर्य युक्त बनाने के लिए, समाप्त करने की प्रतीज्ञा कर ले (संकल्प)। यह दार्शनिक दृष्टि से यह सब लालची, लोभी अहंकारी मनुष्य के अन्त हैं। जो तुझे प्रमोद का अनुभव दे रहे हैं। इन शत्रु तत्व काम क्रोध (माया की बलवती) से कोई छुट नहीं सका। यह चुन-चुनकर पाप कर्मों से जीवन नष्ट, भस्म करने वाले हैं। इनको पीछे पड़ना (क्षणभंगुर) नाशक मार्ग है। देखो जरा बगुला, और मुर्गा, आदि, निरन्तर बुरे, दुष्ट, असुरी राक्षसी कर्मों से लगे रहते हैं, वह असुरी सेना गीध का अन्न होता है। इन असुरी सैनिकों में से कोई नष्ट होने से न बचे। संकल्प लो अस्तु इनमें से जो भी हमें पाप की ओर खिंचकर ले जाता है, वह नष्ट होने से न बचे। कौए इन आसुरी (राक्षसी) कर्मों से लगातार लगे रहते हैं। हे परमानन्द मेरी इन राक्षसी आसुरी वृत्तियों से रक्षा कीजिये, काम क्रोध लोभ, मोह आदि प्रलोभनों, मिथ्य (मायावी) जाल से दूर हटाईये।

मनुष्य-क्यों है लोभी, काम का अज्ञानी-यद्यपि वह प्रभु का शुद्ध अंश आत्मा प्राण से जीता है पर यह लोभ "अहंकार कर्मों ने उसे तामसी वृत्तियों का दास बना कर मरण जन्म, बार-बार योनियों का बदलना कर्मों ने बना दिया है। अस्तु उसे बगुले के छल कपट की तरह मुर्गे के पाखंड, अहंकार, गीध की तरह लोभ का सूचक, कौए की तरह चालाक वृत्तियों का अंग न बनाये। आत्मा सदा पवित्र रहे जो प्रभु का शुद्ध अंश है।

❁❁

(शरीर के साथ संबंध होने से परमात्मा आत्मा का आना जाना प्रतीत होता है जो औपचारिक है, पर जीव कर्म का कर्त्ता है, भोगता है। भगवान नहीं भोगता।)

दूसरों का दुःख गरीबी में जो रोता है—वह महात्मा है नहीं तो दुरात्मा ।
(स्वामी विवेकानन्द)

वेद ईश्वरीय ब्रह्मज्ञान की बातें

महर्षि दयानन्द जी का जीवन क्यों पवित्र भावनाओं का कोष बना क्योंकि उनके हृदय चित्त में सदैव श्रद्धा-अध्यात्मिक बल की शक्तियों की सक्षमता तथा प्रभु भक्ति की प्रेरणा बसी हुई थी।

यह सारा संसार नाशक, विकारमय, राजसी तथा तामसिक अनर्थों का सृष्टि स्थल न होने पर दिखता है।

प्रकृति दिखती है, पर उसका सौंदर्य रूप सुन्दर अवश्य दिखता है, पर उस का आर्कषण अतिमोहित करके जब मनुष्य उसका दुरूपयोग करता है, वह वासनाओं में लिप्त होने के कारण विकारमय राजसी गुण को धारणा देकर नाश रूप प्रतीत करता है। जरा ध्यान दीजिये—गुलाब के पुष्पों की सुन्दरता पर जब वह भ्रमरों में लोभ मोह भरकर वह उसे चूसकर उड़ जाता है वह ही विकार रूप का कारण बन जाता है। भ्रमरे बार-बार उसके चारों ओर उड़ते रहते हैं।

मानव की भी यही अवस्था है वह प्रकृति, धनादि के पीछे अंधा होकर उनके पीछे भागता रहता है, फिर वह धनादि का विकार रूप वासनाओं का शिकार बनकर नाश का कारण बनकर मृत्युः का दुःख भोगने के लिए यमराज मृत शरीर का सन्देश सुनकर, शोक की अवस्था दिखा देता है। दू:सरे शब्दों में यह सृष्टि ना प्रभु का गौण स्वयं प्रकाश ब्रह्म है। आत्मा भी स्वयं प्रकाश है।

हमारी इन्द्रियां विषय मन और पांचभूत (जल, आकाश, अग्नि, वायु, पृथ्वी) इनमें ब्रह्म रूप ही प्रतीत होता है।

जिसने ब्रह्म विचारों में श्रद्धा पा ली (अध्यात्मिक बल) उसका हर कार्य सफलता को चूमकर पर्वत की तरह ऊपर उठता रहा।

ब्रह्म विचारों के साधन हैं

1. श्रवण 2. मनन 3. निदिध्यासन 4. स्वान भूति (शब्द-अनुभव उन ब्रह्म विचारों के सहायक हैं—आत्म ज्ञानी गुरुदेव।

अस्तु इन समस्त विचारों द्वारा रूपादि देहादि अनात्मा पदार्थों का निषेध कर

देना चाहिए, ताकि यह अनात्मता विषय के सन्देहों का मन की भावनाओं से छिन्न भिन्न हो जाये। तथास्तु आत्मा जो सूक्ष्म तत्व है उसमें श्रद्धा की प्रेरणा स्थापित करके सत्य प्रभु के ज्ञान गुणों को अपना करके, घृणा, असत्य, मिथ्या रूप निकाल देना चाहिए। ऐसी अवस्था ही मनुष्य को आनन्द रूप धारण करने से आत्मा में ही मग्न हो जाना श्रद्धा का बल अस्तित्व प्रेरित हो जाना निश्चय ही है। आत्मा विकार विषयों रहित हो जाने से योगाभ्यास द्वारा प्रभु प्राप्ति तथा मोक्ष आनन्द अवस्था में स्थित हो जाता है। संसार के योगक्षेम की चिन्ताओं से दूर हो जाने से वैराग्य अवस्था प्राप्त करता है। प्रभु भक्ति का अमृतपान कर ब्रह्म रूप में अपने को ग्रहण करा लेता है।

उदाहरणः—आकाश अधिष्टा को वायु सुखा नहीं सकती अग्नि जला नहीं सकती, जल भिगो नहीं सकता, धूल मैला नहीं कर सकती। ऋतुओं के गुण सर्दी गर्मी वर्षादि कभी प्रभाव कर नहीं सकते, क्योंकि यह क्षण भर आते जाते हैं। ठीक इसी प्रकार इन ब्रह्म विचारों पर रजोगुणों, तमोगुणों से प्रकृति से उत्पन्न होने वाले तत्वों (यह देह से वृत्तियों) चित्त संस्कार स्थल पर यह गुण आत्मा पर स्पर्श नहीं कर सकते।

महर्षि दयानन्द तथा महान आत्माओं के प्रभु के विचारों की धारणा ने, उन्हें सदा, ईश्वरीय वेद ज्ञान के गुणों में मग्न किया। उन्होंने सात्विक गुणों की प्रेरणा श्रद्धा से प्राप्त की, राजसिक, तामसिक नाशक शक्तियों से आत्मा को परे रखकर भक्ति अमृत का पान करके अमरता प्राप्त की फिर उपकारक कार्य में लग गए।

उनका जीवन विषयरहित तथा संसार के योगक्षेम की चिन्ताओं से सदा मुक्त रहा। केवल एक ही आस्था ग्रहण की। योग समाधिस्थ होकर उसी में श्रद्धा प्राप्त की जिसने अन्तर्रात्मा को प्रभु ब्रह्म का ज्ञान प्रकाश की ज्योति से ध्रुव तारे की तरह प्रकाश की श्रद्धा से मग्न करके अध्यात्मिक आनन्द दिया। वही अंधकार को प्रकाश रूप दिखाता है। यह श्रद्धा अध्यात्मिक शक्ति जिसकी अद्वितीय प्रभु प्राप्ति ऋग्वेद के 151 सूत्र में सारे अंश का अर्थ है। अर्थात—

''श्रदयाग्नि समिध्यते श्रर्दया हुयते हवि।
श्रदां भगस्य मूर्धनि वेदयामसि''

अस्तु आर्यो महर्षि दयानन्द के श्रद्धा के फूलों को यदि जानना है तो मत भूलो वेदों का अ़ध्ययन तथा सत्यार्थ प्रकाश के सत्यता ज्ञान पर अनुकरण करना। तभी सच्चे आर्य कहे जाओगे। शान्ति-शान्ति ॐ यह ही श्रद्धा की आहुति कर्मों द्वारा ज्ञान में रमा हो जाओ।

❁❁

आध्यात्मिक शक्तियों का निरूपण

यह समस्त संसार तनाव कष्टों, हिंसा, स्वार्थ, कल्पित न अनर्थों से भरे वृक्ष के दो बीज हैं, पाप, पुण्य, असंख्य जड़े हैं। यह तीन तत्व सत, रज, तम प्रकृति से उत्पन्न होते हैं, जिसे नारदजी व्यास जी ने संसार (जगत) का कारण कहा है। संसार में धर्म जब प्रभु के समीप सम्बन्ध बनाता है तो धर्म में बल प्राप्त होता है। गृहस्थ एक कठिन आश्रम है, जिससे चारों आश्रमों में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ फिर वानप्रस्थ, सन्यास का अस्तित्व होता है। पुरुष एक प्रभु के पुत्र का प्राचीन इतिहास है। पौराणिक संवाददाताओं के कथनानुसार मनु के प्रसिद्ध पुत्र स्वायम्भुव के पुत्र थे, प्रिय व्रत उसके अग्निध्र और उसके नाभि और नाभि के ऋषमा कहते हैं ऋषम के नौ पुत्र हुए। इनके यह पुत्र वेदों के विद्वान थे फिर कहते हैं इनके कई पुत्र हुए उनमें सबसे बड़े राजर्षि भरत नारायण के भक्त थे, जिसके नाम से यह विशाल भारत वर्ष स्थापित हुआ। फिर यह वेदों की संस्कृति, सबसे प्राचीन कही गई, क्योंकि इनका ज्ञान नौ द्वीपों-अमरीका, अफ्रीका, एशिया, पाश्चात्य देश आदि में फैला।

मनुष्य का यह शरीर घर है। जो हड्डियों का बना हुआ पिंजर है। इसमें दो अनादि पक्षी जीव ईश्वर निराकार रूप में स्थित हैं, इस वृक्ष में असंख्य वासनाएँ जड़ें हैं जो तीन गुण बने हुए शाखाएँ, शब्वादि पांच विषय रस हैं, ज़िन्हें भूत के नामों से परिचय दिया जाता है। (पांच कर्म पांच ज्ञान इन्द्रियां मन) ग्यारह इन्द्रियां शाखाएँ, जीव और ईश्वर पक्षी इस शरीर घर के निवासी हैं। इस वृक्ष में वात पित्त कफरूप तीन तरह की छाल हैं। दो तरह के फल लगते हैं। सुखः दुखः जो नदी के दो किनारों की तरह, कर्मों की गति विधियों की लहरें हैं, जो संसार में रहकर कर्मों के किये हुए फलों को भोगते है। कर्म करने के लिए मनुष्य स्वतंन्त्र है भोगने पर न्यायधीश उनका फलदाता है यानि मनुष्य भोगने में परतंत्र है। गृहस्थी कामनाओं से भरे हुए कारण गीध के समान आँखों से देखता है, फिर अंधा होकर विषयों को भोगने हेतु मकड़ी के जाल की तरह बन्धनों के जाल में लिप्त हो जाता है। जिनको समझने को वेद ईश्वरीय ज्ञान, विद्वानों द्वारा जाना जाता है। जिन्होंने समाधि-तपस्या बल से जाना। भारतीय संस्कृति के अनुसार इन वेदों का ज्ञान चार ऋषियों ने प्रेरणा पाई जो चार थे (1) अग्नि को ऋग्वेद-ज्ञान प्रधान (2) वायु को यजर्वेद-कर्म प्रधान, (3) आदित्य को सामवेद-उपासना प्रधान एवं (4) अंगिरा को अथर्वेद-विज्ञान प्रधान। यह

... अर्थात-वेद सब सत्य विधाओं की पुस्तक है। उनका पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ईश्वर को जानने के लिए धर्म के लिए अध्यात्मिक बल को प्राप्त करना जरूरी है। धर्म क्या है जिसके आचरण से सारा संसार चल रहा है। और आचरण उन व्यवहारों का अस्तित्व है जिनके प्रताप से आपसी प्रीति मेल, समान व्यवहार तथा आपस में कभी झगड़ा न हो सत्य को प्रतिपादन करें। अहिंसा, यम नियम के पालन करने तथा प्राणायाम से सांस को शुद्ध करने। मन की पवित्रता (प्रत्यहार) चिन्तन की पवित्रता (धारणा) ध्यान की पवित्रता मनन से और अन्तःकरण की पवित्रता समाधि से इन्द्रियों की पवित्रता शौंच से होती है। अस्तु शरीर के समस्त अंगों को पवित्र करने से, यह कही हुई बातों पर कर्तव्य पूरा करना ही धर्म का पुण्य पालन है। तभी मनुष्य संसार के उच्च शिखरों पर पहुँच सकता है और आत्मा अपना उद्देश्य प्रभु प्राप्ति मोक्ष का पात्र बन सकता है। उनके उदाहरण महर्षि दयानन्द, कृष्ण, राम, महात्मा गांधी, विवेकानन्द, गुरू नानक इत्यादि है।

समस्त प्राणियों की आत्मा का लक्ष्य है आनन्द भोगना फिर शान्ति स्थापित करके प्रभु ने जो सत्य में श्रद्धा अर्थात अध्यात्मिकता स्थापित करके जीवन की सत्य का निवारण करना। यह घृणा भिन्नता, अधर्म कर्म, आतंकवाद अस्तेय मिथ्या, भ्रम, वासनाओं में लुप्त होना। नास्तिक भाव यह सब असत्य स्थापित कर्म हैं। इसी लिए यह घृणा, असत्य में स्थापित की है, ताकि मनुष्य आत्मा द्वारा ईश्वर का सत्य स्वरूप जानकर अनुकरण करें, प्रिय प्रभु की अर्चना करें धर्म से चरित्र का निर्माण करके प्रभु में ऐसा लीन हो जाये जैसे योगी संसार की सभी आकर्षित शक्ति को त्याग कर एक ही लक्ष्य में स्थिर हो जाता है। जो है भक्ति-वैराग्य।

पाठको इस संसार के दो पक्षी निराकार रूप की ज्ञान चक्षुओं से चिन्तन करो उसमें ध्यान लगाकर सत्य शक्तियों का निर्माण करो तभी आत्मा से विकारों की दीवार हटाकर सात्विक शक्तियों में बृद्धि करके अधर्म का नाश कर सकोगे फिर रज, तम का नाश होगा। संसार को अवश्यकता है शन्ति, प्रेम, सत्य, समानता मनुष्य व्यवहार, शुभ कर्म, शुभ फल उसका सच्चा वृक्ष है प्रभु उसके गुणों के बीज बोओ अत्याचार हिंसा, आतंकवाद, अधर्म का तभी नाश होगा जब हर प्राणी आत्मा के सम्बन्ध प्रभु से जोड़ें। यह मनुर्भव का पथ है। भारतीय जागो, करो निर्माण सत्य शक्तियों से मिटा दो दरिद्रता, अनपढ़, बेकारी, भूख, भिन्नता, शोषण नारी का तथा सत्कार करो। हे जीव श्रेष्ठ बनना है। तो मिटा दो क्लेश तत्व तथा अज्ञानता के।

(शौच क्या है? कामनाओं का त्याग, शरीर के भीतर को शुद्ध करना बन्धन, मोक्ष तत्व जानना पण्डित है।)

... ही अन्तर्आत्मा की उपासना है।

(स्वामी रामतीर्थ)

... ही अन्तर्तात्मा की उपासना है।

(स्वामी रामतीर्थ)

लेखक ढांडा, सुरेन्द्र कुमार

शीर्षक जीवन रहस्य अध्यात्मिक ज्ञान कोष (भाग-दो)

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या